हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

5 अक्तूबर, 1972

खण्ड 2, अंक 10

अधिकृत विवरण

विषय सूची

वीरवार, 5 अक्तूबर,1972

पृष्ठ संख्या

तारांकित प्रश्न एवं उत्तर	(10)1
ध्यानाकर्षण सूचना	(10)7
गैर सरकारी प्रस्ताव (चण्डीगड के बारे मे) पर चर्चा का पुनराम्भ	(10)7
व्यक्तिगत स्पष्टीकरण– चौधरी महेर चन्द द्वारा	(10)43
गैर सरकारी प्रस्ताव पर चर्चा का पुनरारम्भ	(10)43

हरियाणा विधान सभा

वीरवार, 5 अक्तूबर 1972

तारांकित प्रश्न एवं उत्तर

श्री अध्यक्षः माननीय सदस्यगण प्रश्नकाल। पहला तांराकित प्रश्न संख्या 145 चोधरी रामलाल जी का है। उसके लिए ऐक्सटैन्शन दे दी गई है।

Labour Commission's Office

***167 Shri K.N. Gulati**: Will the Chief Minister be pleased to State whether the Government proposes to shift the office of Labour Commissioner to Faridabad: if so, when?

Chief Minister (**Ch. Bansi Lal**): No.

चौधरी बंसी लालः हरियाणा में फरीदाबाद से कही ज्यादा कारखाने प्रान्त के बाकी हिस्सों में है।

Representation for pay Scales

***163. Shri Amar Singh**: Will the Chief Minister be pleased to State whether the Government received any representation from Malaria Under Matric workers Union, Haryana in the Month of July, 1971 for allowing them pay according to revised scales; if so, the steps, if any taken by

the Government, if not, the reasons therefore be laid on the Table of the House?

Chief Minister (**Ch. Bansi Lal**): Yes, The scale of pay of Under Matric Basic Health Workers was revised from Rs. 45-2-75 to Rs. 90-3-120/4-140 on the 1st July, 1972 with retrospective effect i,e. from 1st February, 1969.

श्री अमर सिंह: क्या चीफ मिनिस्टर साहब, बताएगें कि टोटल नम्बर आफ हैल्थ वर्कर्ज कितना है। और उनके स्केल रिवाइज करने के लिए इतना टाइम क्यों लग गया है?

चौधरी बंसी लाल: यह पहले रह गए थे क्योकि यह क्वालीफाइड आदमी नही थे। और मैबर साहब ने भी अपने सवाल मे पहले ही अन्डर मैटिक उनको लिखा है। । यह एक पालीसी मैटर था। it look time to take a policy decision.

श्री अध्यक्ष: अगला तांराकित प्रश्न संख्या 146 चौधरी राम लाल जी का है। लेकिन वे हाउस मे उपस्थित नही है.....

चौधरी शिव राम वर्मा: स्पीकर साहब, अगर हाउस को जानकारी मिल जाये तो क्या हर्ज है? वह तो आज भी नही आ पाए नही क्या वजह हैं? कल तो पता लगा है उनकी पेशी थी यमुनानगर में।

चौधरी बंसी लाल: कंहा पेशी थी? वह तो यहां लग रही है (हंसी)

चौधरी शिव राम वर्मा: यहां वाली की सूचना उनको नही मिली वर्ना यहां के लिये तो जरूरी होता।

श्री अध्यक्ष: वर्मा साहब, इस बारे में पोजीशन यह है कि बिना लिखित अथोरेटी के प्रश्न पूछने की इजाजत नही दी जा सकती ।

चौधरी शिव राम वर्मा: अगर हाउस को सूचना मिल जाये जो इस मे कोई हर्ज की बात तो नही।

श्री अध्यक्ष: यह तो रूल की बात हैं उसके मुताबिक ऐसा नही हो सकता।

चौधरी बंसी लाल: आप रूल ही ऐसे अमैड करा लो कि पार्टी के नाम से क्वैश्चन्ज हो जायें।(हंसी)

Exemption of Scales Tax

***169. Shri K.N. Gulati**: Will the Chief Minister be pleased to state:-

(a) whether it is a fact that the Government levied sales tax at first stage on timber, utensils and paper products used for cottage industry;

(b) whether it is also a fact that the Government has given exemption from the above tax to timber and utensils; and

(c) whether the Government proposes to exempt paper product also from the above tax?

Chief Minister (Ch. Bansi Lal):

(a) Yes.

(b) No.

(c)No.

श्री के. एन. गुलाटी: मैने पहले भी अर्ज किया था। कि कभी कभी अफसरान सवालात का जवाब गलत दे देते है। इस मे भी पार्ट बी का जवाब गलत दिया गया है। क्या चीफ मिनिस्टर साहब बतायेगे कि क्या पिछले दिनों मे ऐजीटेशन नही हुई ओर क्या टिम्बर ओर यूटैलिल्ज को टैक्स से ऐन्जैम्पशन नही मिली ओर अगर मिली है तो जवाब नही की बजाए हां मे होना चाहिए था?

चौधरी बंसी लाल: जगाधरी मे ऐजीटेशन नही हुई। जगाधरी से लोगों का एक डैपूटैशन मुझे मिला था मैने केस ऐग्जामिन कराया ओर जो मुनासिब समझा फेसला कर दिया था।

श्री के. एन. गुलाटी: यह तीनों चीजें एक ही मद में आती है। इस लिए मै दरख्वास्त करूंगा कि पेपर पर भी मेहरबानी करके यह ऐग्जैम्पशन दे दी जाये।

चौधरी बंसी लाल: यह तो मैबर साहब का अपना सोचने का तरीका है। सरकार का सोचने का तरीका ऐसा नही है।

I.P.S., and H.C.S. Officers.

***171.Shri Amar Singh**: Will the Chief Minister be pleased to state the total number of I.P.S. and H.C.S. Officers in the State belonging to the Scheduled Castes togetherwith their places of posting?

Chief Minister (**Ch. Bansi Lal**): A Statement giving the requisite information is laid on the Table of the House.

Statement

The number of officers belonging to the Scheduled Castes in the IPS, IPS and HCS cadres of the State and their places of posting are given below:-

1. (a) Number of Officers belonging to the Scheduled Castes in the IPS Cadre.

(b) Names and the present postings of the officers.

Sr. No.	Name	Place of posting
1	Shri D.D. Kashyap	Superintendent of Police Special Inquiry Agency, Chandigarh.
2	Shri Hans Raj Swan	Assistant Inspector General of Police, Haryana Chandigarh.
3	Shri R.R. Singh	Assistant to D.I.G./C.I.D., Haryana, Chandigarh.
4	Shri Lachhman Dass	Deputy Commandant General Home Guards Cum Deputy

		Director, Civil Defence Haryana Chandigarh.
5	Shri Budh Ram	Commandant 5th HP SSB Battalion, Kulu (on deputation). He has been appointed as Additional Superintendent of Police Rohtak. He has yet to take over there.

ii (a) Number of officers belonging to the Scheduled Castes in the I.A.S. Cadre.

(b) Names and the present postings of the officers.

Sr. No.	Name	Place of posting
1	Shri L.D. Katria	Deputy Secretary, Department of Banking, Government of India, New Delhi.
2	Shri M. Kuttappan	Labour Commissioner, Haryana, Chandigarh.
3	Shri K.R.Punia	Director Food & Supplies, Haryana, Chandigarh.
4	Shri Mahender Singh	Director, Consolidation, Land Records and Special Collector, Chandigarh.

5	Shri R.L. Sudhir	Managing Director, Haryana, Financial Corporation, Chandigarh.
6	Shri Tarsem Lal	Chief Executive Officer-cum-Secretary, Small Farmers Development Agency, Ambala (Also Chief Executive Officer, Marginal Farmers and Agricultural Labour Agency, Ambala).
7	Shri T.D. Jog pal	Chief Executive Officer, Small Farmers Development Agency, Gurgaon.
8	Shri B.D. Dhalia	Deputy Secretary Home, Haryana, Chandigarh.

iii. (a) Number of officers belonging to the Scheduled Castes in the H.C.S. Cadre.

(b) Names and the present postings of the officers.

Sr. No.	Name	Place of posting
1	Shri M.L. Trighatia	Deputy Secretary, Development &Director of Panchayats,

		Haryana, Chandigarh.
2	Shri Gyan Chand	Joint Director, Marketing and Ex-officio. Secretary, Agricultural Marketing Board, Chandigarh.
3	Shri Hargo Lal	Under Secretary Planning, Chandigarh.
4	Shri Rattan Singh	Administrator, Muncipal Committee Gurgaon.
5	Shri S.C. Dhosiwal	Sub-Divisional Officer (Civil), Kaithal.
6	Shri S.L. Dhani	Under Secretary Finance, Haryana, Chandigarh.
7	Smt. B. Singh	Secretary, Haryana Pubic Service Commission, Chandigarh.

8	Shri R.S. kailay	Secretary, Haryana Agro-Industries Corporation, Chandigarh.
9	Shri Jagat Ram	Sub_Divisional Officer (Civil) Narwana.
10	Shri Dharam Vir	Under Secretary, Political, Haryana, Chandigarh.
11	Shri Z.S. Khobra	General Manager, Haryana, Roadways, Chandigarh.
12	Smt. Ved Kumari	Deputy Director, Industrial Training, Haryana, Chandigarh.
13	Shri Ranjit Singh	Sub-Divisional Officer (Civil), Nuh.
14	Shri V.N. Kadhayia	E.A.C. (Under Training Hissar).
15	Shri S.R. Pankaj	E.A.C. (Under Training Karnal).

At present these officers are getting Training at the Revenue Training School, Chandigarh.

श्री अमर सिंह: क्या चीफ मिनिस्टर साहब बताएगे कि इन पांच आईपीएस अफसरों मे से क्या कुछ ऐसे भी है जो जिलों मे पुलिस कप्तान रहें हो ओर अगर हो तो उनके क्या क्या लाभ है।

चोधरी बंन्सी लाल: श्री डी.डी. केश्यप, श्री हंस राज स्वान ओर श्री लक्षमण दास यह तीन अफसर जिलों मे रहे है। चौथे की पोटिंग हुई पडी है। लेकिन अभी तक उसने चार्ज नही लिया है।

श्री अमर सिंह: क्या चीफ मिनिस्टर साहब बताएगें कि इन 6 आईएएस अफसरों मे से क्या कोई ऐसे भी है जो डीसी रहे हो और अगर रहे है तो कौन कौन से जिलों मे रहे है।?

चोधरी बंन्सी लाल: तीन अफसर ऐसे है जो डीसी रहे हैं ओर वे है श्री एम कुप्पन, श्री के आर पूनियां और श्री आरएस सुधीर। श्री कुटप्पन जींद मे, श्री पूनियां जींद मे ओर श्री सुधीर महेन्द्रगढ़ में डीसी रहे है।

चौधरी पीर चन्द: यह सारे अफसर कितने कितने अर्से के लिए जिलों मे रखे गए ओर दूसरे स्वर्ण जातियों वाले कितने कितने अर्से तक रहे है।

चौधरी बंन्सी लाल: इस तरह का कम्पैरिजन नही किया जा सकता।

श्री अमर सिंह: क्या चीफ मिनिस्टर बताएगें कि यह जो 6 आईएएस अफसर है इन मे से क्या कोई जल्दी ही किसी जिले मे डीसी लगाया जाएगा?

चौधरी बंसी लाल: यह तो गवर्नमैट जो मुनासिब समेझगी करेगी।

चौधरी पीर चन्द: हिसार का डीसी कितने सालों से वहां चला जा रहा हैं?

चौधरी बंसी लाल: चला आ रहा हैं ओर चलता भी रहेंगा आगे के लिए भी बता दूं।(हसी)

Electric Connections

***173. Shri K.N. Gulati**: Will the Chief Minister be pleased to state:-

(a) whether it is a fact that electric connections have not been given to the allottees who have constructed their houses in Sectors 14, 16 & 17 at Faridabad;

(b) the time by which the Government intends to give electric connections to the persons referred to in para (a) above?

Chief Minister (**Ch. Bansi Lal**):

(a) and (b) As these sectors have been developed fully and construction activity is very slow, complete local distribution system has not been laid. This work is being taken up shortly.

श्री के. एन. गुलाटी: क्या यह ठीक है कि तीनों सैक्टर्ज मे मकान बने है। और अगर बने हैं तो क्या उनके साथ जो ऐग्रीमैट हुआ है जिसके अनुसार उनको बिजली दी जानी थी। मगर उन्हें नही मिली यह उन्हें कब तक मिल जाऐगी?

चौधरी बंसी लाल: मैने पहले ही कहा है कि जल्दी ही इनको टेक अप करने की कोशिश कर रहे है।

श्री के. एन. गुलाटी: मैने मकानों के बारे में पूछा कि उनके साथ जो ऐग्रीमैट हुआ हैं उसके अनुसार उनको बिजली क्यों नही मिली है। और क्या जल्दी देगे?

चौधरी बंसी लाल: एक एक मकान का मेरे पास जवाब नही है।

श्री अध्यक्ष: एक ध्यानाकर्षण प्रस्ताव राव दलीप सिंह जी की तरफ से महेन्द्रगढ मे सूखे की भंयकर स्थिति के बारे में प्राप्त हुआ है। जिसे स्वीकृत किया गया है। माननीय सदस्य अपना प्रस्ताव पढ दे।

Rao Dalip Singh (Kanina): Sir, I beg to draw attention of the House to the following matter of urgent public

importance and request the Government to make a statement on this subject:-

District Mohindergarh is in the grip of service drought. Due to untimely and inadequate rainfall, Kharif crop has failed in most of the area. The position of Rabi is equally bad. With practically no rain in September, sowing of Rabi Crops has become impossible resulting in great misery and hardship to the population. Hardship is further aggrevated by cuts in electric supply and recovery of loans when economic conditions in the area has become so bad. Even areas served by the LOharu Canal System are not being given enough water for Rabi sowing because according to the statements made by the Hon'ble Chief Minister in the House, water in the JUi and Loharu system can only be given when it is surplus to the requirement of W.J.C. system. At a time when Loharu Canal Irrigation can be so valuable to the drought area, it is being closed. In view of the serious drought conditions in this area I urge the Government to consider ; (1) treating the Loharu Scheme at par with W.J.C. System for Rabi sowing alteast upto 31st October, 1972; (2) Continuous electric supply without cut to the drought affected district; and (3) stay of recovery of all kinds of loans.

चौधरी बंसी लाल: मै कल जवाब दे दूंगा।

श्री अध्यक्ष: चौधरी हरद्वारी लाल जी का जो गैर सरकारी प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ था। उस पर अब चर्चा प्रारम्भ होगी। जिस रोज इस प्रस्ताव पर चर्चा चल रही थी तो मितल साहब बोल

रहे थे। परन्तु मै देखता हू कि वे इस सदन मे उपस्थित नही है। अब कोई दूसरा सदस्य अगर बोलना चाहे तो बोल सकता है।

चौधरी मेहर चन्द (बडोपल): स्पीकर साहब

चौधरी दल सिंह: स्पीकर साहब, मुझे एजेंडा नही मिला, आज पहुचा है यहां पर रखा हुआ है वहां पर नही पहुचा । हमे पता होना चाहिए कि आज का एजेडा क्या है?

श्री अध्यक्ष: यह प्रस्ताव पहले ही प्रस्तुत हो चुका है.....
.....

चौधरी दल सिंह: हमें पता होना चाहिए कि एजेंडा क्या है.....(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: पिछली दफा जब नान–आफिशियल–डे था ओर हाउस ऐडजर्न हुआ था उस वक्त कह दिया गया था कि नैकस्ट नान–आफिशियल–डे पर यह टेक अप किया जाऐगा।

चौधरी दल सिंह: मेरी गुजारिश यह है कि मुझे एजेडा नही मिलता इसका जवाब कोई नही आया, परसों नही मिला आज भी नही मिला। हमने ऐसा सिस्टम कही पर नही देखा जैसा कि यहा पर है कि एजेंडा नही मिलता।

श्री अध्यक्ष: होस्टल मे आपको एजेडा नही मिला?

चौधरी दल सिंह: बिल्कुल नही मिलता.....स्पीकर साहब, होस्टल मे तो मैम्बरों के ठहरने की जगह ही नही है वहां तो दूसरे लोगठहरे हुए होते है कैसा तमाशा बना हुआ है।

श्री अध्यक्ष: मै देखता हू अगर कोई ऐसी बात है तो।

चौधरी रिजक राम: स्पीकर साहब, इस तरफ थोडा सा ध्यान देना चाहिए जब कभी हम होस्टल मे आते है तो होस्टल मे टुरिस्ट लोग ठहरे हुए मिलते है। एमएलएज को ठहरने के लिए जगह नही मिलती। पिछली दफा बडी दिक्कत पेश आई हम इधर उधर कर कराके ठहरे.....

श्री अध्यक्ष: क्या सैशन डेज मे?

चौधरी रिजक राम: नही नान–सैशन डेज मे जब हम कमेटी मीटिंग मे आते हैं तो कई दफा ऐसी दिक्कत पेश आती है। कुछ ऐसा कर दिया जाये कि मैम्बर्ज के लिए कुछ कमरे रिजर्व कर दिये जायें यह ठीक रहेगा। ये रिजर्व कमरे एमएलएज के अलावा किसी ओर को न दिये जाये।

चौधरी दल सिंह: मैने सैक्रेटी साहब से टेलीफोन पर बाते की तो उनका जवाब था कि मुझे नही मालूम एमएलएज से पूछो। After all who is responsible for this? He is the Secretary he must know.

चोधरी बंसीलाल: इनको किसी चीज का पता नही होता आपका कसूर नही है।

चौधरी दल सिंह: ऐसी बात नही, जब हरियाणा विधान सभा के सैक्रेटेरिएट की तरफ से अलाटमैट थी तो Secretary is supposed to be in the know of every thing in this connection.

चौधरी बंसीलाल: यह बात बिजनैस ऐडवाईजरी कमेटी मे आई थी। कमेटी में भी ऐसा हुआ था तो कहा था कि चाबी हमारे पास नही रहती पता नही किस के पास रहती है। That is right. That grievance of the member is correct.

श्री अध्यक्ष: चोधरी रिजक राम जी ने जो होस्टल के कमरों के बारे में बात कही है यह एक समस्या है और मै चाहूगा कि जो ग्रुप लीडर है या पार्टी लीडर है, वे मुझसे चैम्बर मे मिले। हम सब इस समस्या को मिलकर हल करे। इस मामले मे मुझे सबके कोआपरेशन की जरूरत है इस समस्या को हल करने के लिए मेरे सामने भी प्रौब्लमज है । मै चाहूंगा कि इस मे आप सब का सहयोग मिले ताकि हम मैम्बर साहिबान के लिए समुचित प्रबन्ध कर सके।

चौधरी रिजक राम: कोई टाईम फर्मा दीजिए तो आ जायेगे।

श्री अध्यक्ष: किसी समय भी आ सकते है अब चौधरी मेहर चन्द अपनी स्पीच जारी करेगे।

चौधरी मेहर चन्द: स्पीकर साहब, जो रैजोल्यूशन फाजिल्का ओर अबोहर एरियाज को हरियाणा मे मिलाने का हाउस मे जेरेगोर हैं मै इसकी पुरजोर हिमायत करता हू। प्राईम मिनिस्टर के इसअवार्ड पर फौरी तौर पर ऐक्शन होना निहायत जरूरी कदम होगा है। ताकि मार्च, 1973 तक कम सेकम यह तो पता चले कि आखिर होगा क्या? हरियाणा की जनता बडी बेताब है और उसके सब का प्याला लबरेज हो चुका हैं । जनता बारी बारी पूछती है कि केन्द्रीय सरकार ने जो डिसीजन 29 जनवरी, 1970 को किया था उस पर अमल होगा या नही अगर होगा तो कब तक होगा? जनता यह कहती है कि उहम इनडैफिनिटली वेट नही कर सकते। बहुत देर तो पहले ही हो चुकी है स्पीकर साहब, मै तो समझता हू कि ओर मुझे ऐसा मालूम होता है कि अबोहर ओर फाजिलका हरियाणा को प्रैस्टीज इशू बनाना ही पडेगा। हमारे साथ यह क्या मजाक हो रहा है? शाह कमीशन ने चण्डीगढ ओर खरड तहसील हरियाणा को दिया था ओर इसके बाद हिन्द सरकार ने फाजिल्का ओर अबोहर का एरिया हरियाणा को दे दिया था। मगर सही मायनों मे मिला कुछ भी नही । यह तो मखौल की बात हो रही है हरियाणा कोई गुडिया तो है नही जिसको इधर से उधर बैठा दिया ओर उधर से लिया इधर बैठा दिया। आखिर खुददारी भी दुनिया मे कोई चीज है। मुझे तो हरियाणा के बहादुरों से एक ही बात कहनी है मै लम्बी चौडी नही बोलूंगा। दो चार बाते ही कहूंगा। इस रैजोल्यूशन के बारे में मैने हरियाणा के वीरों से असली बात यह कहनी है–

इसलिए अब जरूरत है बोल्ड स्टैप लेने की ओर बौल्ड स्टैप यही है कि हम केन्दीय सरकार से दरख्वास्त करे, उन को बार बार प्रैस करें कि इस इशू को अब डिलें न करे। इसको डिले करने से हमारी जनता के अन्दर बडे डाउट्स पैदा हो गए है जिन को हम रिमूव नही कर सकते। जनता महसूस करती है कि जो डिसीजन 1970 मे हुआ था उसको अमलीजामा पहनाये। डिसीजन के मुताबिक चण्डीगड हमे पाच सालों के लिए मिला थां ओर वह लिमिट 29 जनवरी, 1975 मे खत्म हो जायेगी। पांच साल का अर्सा पूरा नहीं हुआ ओर एकदम यह कह दिया है कि यह डिसीजन क्लीयर नही इस डिसीजन मै इफ्स एंड बडस है ओर यह दूसरी चीजों से कुनैक्टिड है लेकिन Chandigarh is not linked with any thing else यह पांच साल का डिसीजन है। स्पीकर साहब, मै आपसे दरख्वास्त करता हू और हरियणा सरकार से भी दरख्वास्त करता हू कि हम डिसीजन को इम्पलीमैट कराया जाये हम एकदम चण्डीगढ छोड कर कहां जाऐंगें? क्या हमें चण्डीगड को छोडना पडेगा? यह हमारे लिए जलालत की बात होगी। अगर कोई ऐसी बात हुई । इसीलिये मेरा सुझाव है कि वक्त पर कदम उठा ले तो बेहतर है । (व्यवधान) .....जनसंघ के मेरे साथी ने मेरी तरफ इशारा किया है। मै कहना तो नही चाहता था कुछ लेकिन अब कहूंगा जनसंघी साथियों से। दो मे से आज एक ही बैठे हे। (व्यवधान) वर्मा साहब बैठे है आपको तो एक ही बात कह दूं। आपके ऊपर तो यह शेर हन्डर्ड परसैट लागू होता है जो बन्दा यहां अर्ज करने लगा है:—

श्री अध्यक्ष: आप मेरे से मुखातिब होईए।

चौधरी शिव राम वर्मा: अपनी कांग्रेस के बारें मे भी तो कहिए।

चोधरी मेहर वर्मा: मै तो स्पीकर साहब अपनी कांग्रेस से मतलब रखता हू काग्रेस (ओ) से इस बन्दे का सरोकार है ही नही। बिल्कुल सरोकार नही है। मै तो एक कांग्रेस (आर) से ही संबंध रखता हू। (व्यवधान) दूसरी सरकार से हमारे चीफ मिनिस्टर साहब खुद निपट लेगे उसमे मेहरचन्द काकाई काम नहीं है। मेहरचन्द का काम तो इस हाउस में बोलना है ओर स्पीकर साहब आपकी मार्फत अपने चीफ मिनिस्टर साहब से दरख्वास्त गुजारिश करना है मेहरचन्द का काम पंजाब के चीफ मिनिस्टर से झगडा करना नही है। वह काम लिया है मैम्बरों मे से यदि किसी ने मेरे ख्याल मे जनसंघ ने लिया होगा ओर या लिया होगा कांग्रेस (ओ) ने। काग्रेंस (आर) ने इसका ठेका नही लिया है। काग्रेंस (आर) एक डिस्पिलिन्ड जमात है वह डिस्पिलिन के मुताबिक काम करती है। इन शब्दों के साथ मै फिर दोबारा इस रैजोल्यूशन की बहुत पुरजोर ताईद करता हूं।

श्री के. एन. गुलाटी (**फरीदाबाद**): माननीय स्पीकर साहब, मै इस रैज्योल्यूशन की पुरजोर ताईद करते हुए आपकी मार्फत हिन्द सरकार से यह कहना चाहता हूं कि हरियाणा हर बात

मे हिन्द सरकार की मदद करता है तो इसके साथ यह सौतेली मां वाला सलूक क्यों?

श्री अध्यक्षः गुलाटी साहब, आज खुला टाईम है खूब बोलना जी भर कर।

श्री के. एन. गुलाटीः जब कमीशन भी फैसला दे चुका है अवार्ड भी हो चका है। तो हरियाणा को अबोहर ओर फाजिल्क के इलाके क्यों नही दिये जातें? मेरी समझ मे नही आता कि हरियाणा के साथ सौतेली मां का सलूक क्या करते है।? इस मामले पर हम सबको सारे एमएलएज को एक हो जाना चाहिए इस मे पार्टी का सवाल नही है। छोटी छोटी बातों के लिए एक दूसरे के ऊपर कीचड नही उछालना चाहिए। एक दूसरे से हमदर्दी पैदा करनी चाहिए। ओर हमें चाहिए कि हाउस मे हम सब मिल कर एक यूनानिमस रैजोल्यूशन पास करके हिन्द सरकार को मजबूर करे कि मार्च, 1973 तक ये इलाके हमे मिल जाने चाहिए। ताकि हम अपना प्रंबध कर सके। मै गांधीवाद मे ओर गांधी जी के असूलों मे बहुत ही अकीदा रखता हूं जेसे गांधी जी ने सत्याग्रंह के तरीके से क्विट इंडिया मूवमैट से अग्रेजी सरकार का यहा से भगा दिया वैसे ही मै आज हाउस से स्पीकर साहब की मार्फत यह अर्ज करना चाहता हू कि यदि हमे इस नुक्ते पर जल्दी अमल कराना है तो बातो से या तकरीरों से काम नही चलेगा। हमै गांधीवाद के असूलों पर कदम उठाना होगा। ओर मै यह अर्ज कर देना चाहता हू कि हिन्द सरकार को एक नोटिस दिया जाय बडे प्यार भरे

तरीके से कि अगर हमें मार्च, 73 तक फाजिल्का ओर अबोहर का यह इलाका नही मिलता तो हमारे सामने दो तरीके है एक तो यह कि हाउस निर्णय करे, रैज्योल्यूशन पास करे कि मार्च, 1973 तक अगर हमें अबोहर फाजिल्का नही मिला तो सारे एमएलएज अपने अपने इस्तीफे प्रधान मंत्री को भेज देगे। नम्बर दो अगर यह तरीका पसन्द नही हाउस को तो गुलाटी बतौर एम एल ए सत्याग्रह धरना ओर भुख हडताल पर प्रधानमंत्री की कोठी के बाहर बैठना चाहते है। अगर हाउस मेरी बैक करे ओर यह रैज्योल्यूशन पास कर दे तो यह है मेरे जजबात । कोई भी मैम्बर ऐसी बात न करे। जिससे आपस का प्यार घटे, प्यार तो बढना चाहिए। अपना अपना तरीका है। कि इंडिपैन्डैन्ट मैम्बर काम नही करता। यह बात गलत है पाटियां तो आपस मे लड सकती है लेकिन इंडिपैन्डैट सही प्रोगाम बता सकता है। सही सजैशन दे सकता है। ओर सही बात पर अमल करना चाहता है सरकार की मदद करना चाहता है। ऐसी बाते कि इंडिपैडैन्ड मैम्बर काम नही करता या जनसंघ वाले काम नही करते ठीक नही है। रूलिंग पार्टी को फराखदिल रहना चाहिए ओर सही क्रिटिसिज्म को बरदाश्त करना चाहिए। वे जब भी जवाब दे। मीठे तरीके से दे अगर वे गांधी जी के पैरोकार है गांधी जी का कहना तो यह था कि मीठा बोलना चाहिए ओर हर बात का जवाब नम्रता से देना चाहिए। तो मेरी यह रिक्वैस्ट है कि इस रैज्योल्यूशन की पुरजोर हिमायत करते हुए मैने जो जजबात हाउस के सामने रखे है

उनको मददे नजर रखते हुए हाउस निर्णय करे। मेरी सेवांए हर वक्त स्पीकर साहब को हाजिर है।

श्री अध्यक्ष: पिछले नान–आफिशियल डे के अवसर पर जब हाउस ऐडजर्न हुआ तो मितल साहब बोल रहे थे। यदि आप लोगों को आपति न हो तो मितल साहब बोल दे।

कुछ आवाजें: कोई आपति नहीं है।

श्री अध्यक्ष: मितल साहब, बोलिए।

10.00 A.M.

श्री रामसरन चन्द मितल (**नारनौल**): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मै आपका ओर सदन का बहुत आभारी हू जो मुझे समय बोलने के लिए दे दिया गया है। चंडीगढ अबोहर ओर फाजिल्का के सवाल के बारे में मैने पिछले टाईम भी सदन की सेवा में कुछ निवेदन किया था। इसमें कोई शक शुबह की बात नही कि अबोहर फाजिल्का हिन्दी भाषा क्षेत्र है। चाहै कोई कुछ भी कहे लेकिन यह ऐतिहासिसक रूप से और कईप्रकार की और बातो से भिनन है कि यह इलाका जो कि हिन्दी भाषा है हरियाणा मे शामिल होना चाहिए। शाह कमीशन जब अप्वायंट हुआ तो उस वक्त यह रखा गया कि असूल कंटिग्युटि का होना चाहिए। लेकिन किसी भी गलती से वह डिसकनैक्ट कर दिया गया ओर जिन्होने डिसकनैक्ट किया वह इसलिए डिसकनैक्ट किया कि वह हिस्सा उधर रह जाये इसलिऐ कि वह उपजाऊ अच्छा है फरटायल है और वहां कपास

वगैरा अच्छी पैदा होती है। वहां पंजाबी भाषा बोलने वाले लोग हो इसीलिये उसे वहां नही रखा गया `लकिन कंटिग्युटि को तोडने केलिए वे इलाके उधार मिलाए गये। यह बात शाह कमीशन के सामने बडे जोरो से रखी गई थी ओर मेरा ख्याल है कि उन्होने इस बात को ही माना भी था लेकिन चूंकि टर्मज आफ रैफरैन्स के अन्दर कंटिग्युटि का सवाल था उन्होनें इस बात को माना भी था इसलिये वे इस बात का फैसला हमारे हक मे नही कर सके। इसलिऐ यह काम नही हुआ। पिछले टाईम जब यह सदन के सामने प्रश्न था यह प्रस्ताव था उसके बाद कुछ घटनाएं ओर हो गई । मै उन घटनाओ मे नही जाना चाहता लेकिन इतना सिर्फ निवेदन करना चाहता हू कि अगर किसी भाई को हरियाणा मे या हरियाणा के बाहर किसी बात की आपति है और इस बिना पर है कि हरियाणा छोटा सा इलाका है ओर जब फाजिल्का ओर अबोहर यहां से मिल जाएगे तो फिर वह एक बोर्डर स्टैट हो जायेगी। ओर बार्डर स्टेट होने से अपने इलाके की संपर्क होगा। ओर शायद कोई झगडा वगडा हो जाये हम अपने इलाके की हिफाजत न कर सके। तो मै बताना चाहता हू कि हरियाणा वीरो का क्षेत्र है हरियाणा मे कुरूक्षेत्र है जहां महाभारत जंग हुई और श्री कृष्ण भगवान ने गीता का उपदेश दिया था। यहां पर दिल्ली के लिए कितनी ही लडाईयां हुई । यहां के लोगों ने बडी बहादुरी से जंग लडी। अग्रेजों के जमाने मे भी दूसरे देशों में हरियाणा के जवानों ने बडी बहादूरी दिखायी। उस समय जब दूसरे देशो के साथ जंग हुई तो हरियाणा के लोग काफी तादाद में फौज मे थे। वहां उनके

अपने कर्तव्य कोएक सैनिक के रूप में बडी बहदुरी से निभाया । आजाद होने के पश्चात चाइना ऐग्रेशन हुआ पाकिस्तान के साथ दो लडाईयां हुई हरेक लडाई मे यहां के लोगों ने बडी बहादुरी के काम किये।

चौधरी फूलचन्द (मुलाना, अनूसुचित जाति): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, हमारे सामने एक बहुत महत्वपुर्ण प्रस्ताव है जिस पर बहस जारी है। मै आपको उस तरफ ले जाना चाहता हू । जब हमारी प्रधान मंत्री साहिबा ने यह एवार्ड अनाउन्स किया था। आपको याद होगा उस समय पंजाब के चीफ मिनिस्टर ने क्लीयर शब्दो मे कहा था कि आज पंजाब के लिये वह दिन है जबकि हमे दीवाली मनानी चाहिऐ। आप सब को यह बात याद होगी। खैर बहरहाल बात यह हुई कि उनको कहा गया कि सरकारी तौर पर तो दीवाली मनायी गयी। वैसे ही आप लोगौं को कहो कि खुशियों मना ले ओर वास्तव मे पंजाब मे दीवाली मनायी गयी। मै उनसे पूछता हू कि उनको क्या अधिकार है इस बात को कहने का कि उस समय जो अवार्ड दिया गया था। वह एवार्ड नही था ओर हम उसको मानते नही है उनको इस बात को ध्यान मे रख कर चलना चाहिए कि जिस बात की कल वे सपोर्ट करते थे आज भी उसको सपोर्ट करना चाहिऐ। प्रधानमंत्री का ब्यान आपने सुना होगा? अभी थोडे ही दिन हुए जब वे शिमला से वापस आ रही थी तो कुछ पत्रकारों ने उनसे यह पुछा था कि प्रधान मंत्री साहिबा आपने सन् 1970 मे जो बात कही थी इस मसले पर क्या वह अवार्ड था या

एडवाईस थी? उन्होने यह कहा था कि this is no time to comment इस तरह से मै अपने साथियों को यह बताना चाहता हूं कि हमारी प्राईम मिनिस्टर की ऐसा कहने में कोई बुरी भावना नही थी ओर हमे पूरी तवक्कुह करनी चाहिए। कि वे हरियाणा के साथ बे इन्साफी नही करेगी। ओर जो एवार्ड दिया गया है उस पर डिटी रहेगी। ओर उन्हे डटे भी रहना चाहिऐ। इसी सिलसिले मे हमारे सामने बाउन्डरी कमीशन का मसला है आप सब को मालूम होगा खास तौर पर मै तो अम्बाला के बारे मे यह जानता हू कि जब री आर्गेनाइजेशन के लिए शाह कमीशन बैठा था तो यह जो इलाके लालडू डेराबस्सी ओर इसके आस पास के सैकडों गांव है जिन्हे कामन मार्किट अम्बाला ले लगती है कचहरी अम्बाला के पास लगती है ओर जिनका सब बाजारी काम भी अम्बाला से पडता है ओर जिनका अम्बाला से 8—9′ मील का फासला ळै इनकी समस्या हल नही हो सकी है आज उनको हर काम के लिये पटियाला जाना पडता है इन सब हालात को देखते हुए कि ऐसी समस्याओं का सुनना अति आवश्यक है बाउन्डरी कमीशन का बैठना बहुत जरूरी है ताकि इस समस्या का समाधान हो सके। यह बात हमने शाह कमीशन के सामने भी पेश की थी जब वह चंडीगड मे बैठा था। लेकिन मालूम नही क्यो उसने इस चीज को रिकमैड नही किया। इसी तरह केओर मसले हिसार डिस्ट्रिक्ट मे भी हो सकतेहै दूसरे डिस्ट्रिक्ट्स मे हो सकते है। क्योकि कुछ इलाके हरियाणा के नजदीक पडते है । उनकी हर चीज हरियाणा से कामन पडती है ओर जाना उनको पंजाब मे पडता है यह बडे दुख की बात है

हरियाणा के साथ बेइन्साफी हो। एक बडे भाई के नाते पंजाब को चाहिए कि हरियाणा को ज्यादा अच्छी तरह से टीट किया जाये। जो बात आज चल रही है इस बात को कोई भी पसन्द नही करेगा। हरियाणा की जनता को और हरियाणा के लैजिस्लेटर्ज को इस बात के लिये तैयार रहना चाहिए। कि हरियाणा के मफाद के लिये हमें जो भी कुबानी देनी पडे वह हम दे सके। इन शब्दों के साथ यह जो संकल्प हाउस के सामने है इसका सर्मथन करता हू ओर स्पीकर साहब, की मार्फत सदन से यह प्रार्थना करता हू कि इस संकल्प को पास करने प्रधान मंत्री साहिबा तक भेजा जाये ताकि उस अवार्ड के जल्दी कार्याविन्त किया जा सके।

चौधरी पीर चन्द (बरवाला अनुसूचित जाति): माननीय अध्यक्ष महादेय जो प्रस्ताव आज सदन मे आया हुआ ळै मै इसका पुरजोर सर्मथन करता हूं ओर आपके द्वारा सरकार से यह निवेदन करता चाहता हू कि उस अवार्ड के लागू करने मे जो डिले हो रही है यह आज हरियाणा के लिये बडे दुख की बात है। आज से दो अढाई वर्ष पहले की बात है हरियाणा के अन्दर लोगों को सरकार पर पुरा विश्वास था। इस भरोसे के होते हुए भी जब हमारी प्रधान मंत्री ने चडीगड के बारे मे जो अपना फैसला दिया ओर हरियाणा को फाजिल्का ओर अबोहर का इलाका दिया तो हरियाणा के लोगों मे एक बडा भारी रोष फैला। यह रोष इसलिये फैला क्योकि चंडीगड ही सारे हहिस्तुस्तान मे एक ऐसा शहर है जिसकी बिल्डिेग देखने का आते है । हमारे हरियाणा को लोगों

को इससे बडा प्यार था बडा प्रेम था। उन फेसले को लेकर हमारे दिलो। मे कुछ उमंगे आयी कुछ बुलबले उठे। जिस वक्त हमारी प्राईम मिनिस्टर ने वह फैसला दिया उस वक्त हरियाणा के अन्दर एक बडी भारी बद अमनी फैली। प्रदेश के अन्दर कई सौ लडके पुलिस के कई आदमी ओर जनता के काफी आदमी मारे गये। हजारों लाखों की तादाद मे हरियाणा मे सरकार का ओर पब्लिक का नुकसान हुआ। इन सारी बातेा के होते हुए ओर इतने दुखों को झेलने के आद भी आज हम इस रैज्योल्यूशन की हिमायत करते है। इस सब का एक ही मकसद है। हमने इतनी हिम्मत दिखाई इतनें दुख उठाये। ओर सरकार के कहने से या खुद अपने ख्याल से दिल्ली प्रदर्शन के रूप मे लाखों की तादाद मे पहुचे ओर यह दिखा दिया कि चंडीगड हमारा है बहुत भारी इलका है अच्छी खासा शहर है और यह हमें अवश्य मिलना चाहिए। लेकिन किसी भी वजह से है। हरियाणा की बदकिस्मती समझें या खुशकिस्मती समझे हरियाणा के बाशिन्दे ओर हरियाणा की सरकार इस बात के लिए ऐग्री कर गए ओर हमारी प्राईम मिनिस्टर ने जो फैसला दिया उसे मानने के लिये तैयार हो गये। आज तक हमें जो फाजिल्का ओर अबोहर का इलाका नही मिला है इसकी वजह से हरियाणा की जनता के दिलों पर एक बडा भारी पहाड पडा हुआ है। उनके दिलों मे मायूसी है वे यह समझते है कि यह बडे दुख की बात है हालांकि पंजाब के अन्दर कांग्रेस की सरकार है हरियाणा के

अन्दर कांग्रेस की सरकार है। ओर सैटर के अन्दर भी काग्रेस की सरकार है। लेकिन इस सब के बावजूद हरियाणा का जो हक है उसे लेने मे हरियाणा सरकार को सफलता मिली है। आज जब तक हम लोग अपनी कांस्टिचुऐंसिज मे जाते है तो लोग हमसें पूछते है हमको शर्मिदा करते है कि आप लोग वहां जाकर क्या करते है। आज से दो अढाई वर्ष पहले लोगों ने फेसला किया कि यह जो हमारा हरियाणा है विशाल बने। हमारे यहां के नुमांइदों का ख्याल था कि मेरठ ओर कुछ इलाके राजस्थान के हमे मिलेगें। लोगों में इस बात के लिऐ खुशाी हुई लेकिन आज उनकी बह खुशी वही ही वही रह गई । मै सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि मौजूदा हालात मे जो फसला होगा उसमें हम सब एक है लोगों को कुछ पता नही है कि इस मामले मे कोताही कहां है। कया सरकार की तरफ से कमी है या हमारे प्रतिनिधियो की कमी है। अगर आप चाहते है तो हमारे इस्तीफे लेले हम इनके लिए तैया है हम ऐजीटेशन के लिये तैयार है हम हर कुर्बानी के लिये तैयार है। मै सरकार से कहना चाहता हूं कि सारे मैम्बर चाहे कांगेस के है या अपोजीशन के मैम्बर है तमात के तमाम आपके साथ है मै चाहता हू कि इसमें किसी किस्म की कोताही नही करनी चाहिए। यह हरियाणा के मान

को सवाल है। जिन्दगी का सवाल है। अगर आप लोग इस पर अमल नही करेगे तो हिन्दुस्तान के अन्दर यह पहली मिसाल होगी कि हिन्दुस्तान की प्रधानमंत्री ने एक बात कही एक अवार्ड दिया ओर और उसको उल्टा जाये हो सकता हे कि हमारा सूबा छोटा होने के नाते या कोई कमजोरी देखने के नाते उन्होने हमारे लिए हुए इलाके पंजाब को दे दिये । लेकिन हमें बता देना चाहिए। हमारा छोटा सूबा जरूर है लकिन हम किसी से कम नही है। हरियाणा के लोग किसी से भी बहादुरी मे कम नही है। हमारे यहां के वीरों ने तमाम लडाइयों के अन्दर चाहे वह चीन के साथ लडी गई या पकिस्तान के साथ लडी गई। अपनी बहादुरी के कारखाने दिखा दिये है। एक हरियाणा ही ऐसा सूबा है जिसके वीरों ने अपनी छाती सब से पहले आगे लगाई ओर अपनी वीरता आरे बहुादरी दिखायी। आप लोगों को इस बात का ख्याल होना चाहिए कि इतने बहादुर होते हुए भी हम पीछे हटते है तो यह सरकार की कमजोरी है। पब्लिक की कमजोरी नही है पब्लिक आपके साथ है आपके हुक्म की देर है। आप चाहे जो करिये हम आपके साथ है मैज्यादा वक्त न लेते हुए आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि यह जो रैज्योल्यूशन हे इस पर जल्दी से जल्दी अमल किया जाए।

श्री रामधारी गौड (गोहाना): आदरणीय स्पीकर साहब, आज जो यह प्रस्ताव चौधरी हरद्वारी लाल ने हाउस के सामने रखा है यह कोई खाली प्रस्ताव नही है बल्कि इस प्रस्ताव के अन्दर हरेक हरियाण्वी चाहे वह बच्चा हो जवान हो बूढा हो नर हो या नारी हो उन सब की भावनाएं छिपी है। हरेक हरियाणाी आज इस ढंग से सोचता है कि हमारे साथ ज्यादती हो रही है ओर इसी ज्यादती की वजह से हरियाणा पंजाब से अलग हुआ। जब हरियाणा ओर पंजाब एक थे उस समय हरियाणा का विकास नही हुआ क्योकि सरकार की बागडारे उन लोगेां के हाथ मे थी । हरियाणा वाल चाहते थे अलग होना लेकिन उनकी हालत ऐसी थी कि जैसे कि पिछरे मे बन्द पक्षी की होती है। (इस समय सभापतियों की सूची मे से एक सदस्य चौधरी सरूप सिंह पदासीन हुए) वह आजाद होने के लिए पैर फडफडाता है। लेकिन उसको निकलने नही दिया जाता । हमारी ख्वाहिश थी कि हमने पैरो पर खडे होकर अपना विकास करे लेकिन यह विकास तब हो सकता था जब हम पंजाब से अलग हो जाये। उस वक्त हमारे सोचने का तरीका कोई फिरकेदारना नही था बल्कि हम अपने आर्थिक विकास के लिए सोचते थे। हम चाहते थे कि अगर हम अलग हो जायं तो हम अच्छी तरह से अपना विकास कर सके। अकाली भी चाहते थे लेकिन उनके सोचने की तरीका ओर था। वह फिरकेदाराना ढंग से सोचते थे लेकिन हम आर्थिक ढंग से सोचते थे। आखिरकार लम्बी जददोजहद शुरू हुई ओर उसके बाद

जो हमारे शासक थे। वे सम्भल गए। उनको यकीन था कि हरियाणा ओर पंजाब अलग होगे। उन्होने समझ लिया कि हरियाणा बंटेगा ओर जैसा मैने अभी बताया कि हमारे साथ ज्यादती होती थी। बेइन्साफी होती थी और इसका सबूत यह है कि उन्होने गांवो मे जमांबदी बदल दी। गिरदावरियां बदल थी हदबंदियां बदल थी जिससे कि अलाहिदा होते वक्त यह गांव हरियाणा में न चले जाये। उस समय इस ढंग से बात की साजिश की गई । आपको मता हेागा कि रिजनल कमेटियां बनाई गई ओर कहा गया कि यह कमेटियों विकास के लिए बनाई गई। लेकिन वह कमेटियों बेकार साबित हुई । उनसे कोई विकास नही हुआ। वह कमेटियां हमारी ख्वाहिशत को अमली जामा नही पहना सकी। खैर जदोजहद चलता रहा। हरियाणाा ओर पंजाब का बंटवारा हो गया। क्योकि हकूमत उन लोगों के हाथ मे थी बंटवारे के समय मुझे याद है कि चुकिं मै सदन का मैबर था उस वक्त टूटा फूटा फर्नीचर टूटी फूटी कुसिंयां हमको दी गई ओर इसमें काफी गडबड घुटाला किया गया। मैने अभी बताया है कि हरियाणा क्यों चाहता था बंटवारा हम क्यों चाहते थे अलाहदा होना यह एक लम्बी दास्तान है। जैसा मैने पहले बताया कि पंजाब ओर हरियाणा जब इकट्ठे थे तो हरियाणा का कोई विकास नही हुआ । हरियाणा की भूमि पर कागजात मे 42 प्रतिशत पानी था। लेकिन सही मायने मे 21 प्रतिशत भूमि पर ही पानी था। अगर 21 प्रतिशत पानी जमीन को दिया जाये तो काम तो चल सकता है लेकिन यह लाजमी हो जाऐगा कि बाकी जमीन खुस्क रह जायेगी ओर उसका कोई

इन्तजाम नही होगा। दूसरी तरफ बिजली का हाल था वैसे तो कहा जाता था कि हरियाणा मे 40 प्रतिशत देहात मे बिजली दी गई है लेकिन असल मे 19 प्रतिशत ही बिजली मिलती थी। आप देखे दुगने अढाई गुने का फर्क है । हरियाणा के लोग रेवेन्यू देते थे लेकिन विकास होता था पंजाब का । यही हाल सर्विसिज का था। हरियाणा के आठ प्रतिशत सर्विसिज मे थे। वह ठीक है कि डंडी मारी जाती है लेकिन वह इतना तो नही होता कि देने वाली जिनस ही गुम हो जाये। ओर खाली घडा रह जाये। उसके बाद आप देखे। सडकों की क्या हालत थी। सारी सडके टुटी फूटी थी। दस्तकारी का भी हरियाणा मे कोई इन्तजाम नही थां। जैसा मैने पहले बताया कि बडी साजिश हुई । शाह कमीशन बैठा। जिसने बंटवारा किया गया भाषा के आधार पर । शाह कमीशन ने खरड लालडू डेंराबस्सी हरियाणा को दिए लेकिन बावेला मचा दिया । शोर हुआ । पहले कहते थे कि हमने मान लिया ओर फिर शोर मचा दिया। बाद में जो फेसला हुआ उसमे चडीगड को कामन रखा गया ओर उसको यूनियन टैरेटरी बना दिया गया। शाह कमीशन जोकि एक भारी कमीशन था। उसका फैसला था ओर चडीगढ हरियाणा का मिला था इसलिये उसका फैसला लागू होना चाहिए। लेकिन हमारे साथ ज्यादती हुई । अगर संत उनके पास है। तो संत हमारे पास भी है। लेकिन पंजाब मे चन्डीगढ केइशू पर संत फते सिंह ने भुख हडताल की ओर कई बाते हुई उसके बाद आखिरकार हमारी प्रधान मंत्री जी ने सोच समझकर एवार्ड दिया कि चडीगढ पंजाब को दे दी जाये क्योंकि उसके लिए संत

फतेह सिंह ने मरने की धमकी दी है। ओर उसके बदले में उन्हानें फैसला दिया कि फाजिल्का ओर अबोहर के इलाके हरियाणा का अंग होगे। अबोहर के लोगो की जबान ओर रस्मोरिवाज हम से मिलते है। ओर वे काफी देर से इस बात की इन्तजार में थेकि कब मोका आए ओर हम अपने ओर हम अपने भाईयों के साथ मिलकर हरियाणा मे मिले। लेंकिन उनके पंख कैची से काटे जाते थे। अब जब एवार्ड मिला तो उस वक्त पंजाब वालो ने पहले दीवाली मनाने का फेसला लिया ओर बडी खूशी मनाई। लेकिन बाद में जब इक्तसादी तौर पर सोचा तो फिर से घबराए कि यह तो गलत बात हई है और अब वे बहाने ढूढ रहे है। क्भी कहते है कि पंजाब बौर्डर का इलाका है ओर यदि फाजिलका ओर अबाहेर का इलाका हरियाणा को दे दिया जाये। तो वह वही भी बार्डर स्टेट बन जायेगी। मै उनसे यह पूछना चाहता हू कि क्या हरियाणा लडना नही जानता । हरियाणा ने चीन क दांत खट्टे किए हरियाणा के जवानों ने दो लडाईयों मे पाकिस्तान के दात खट्टे किए। इस लिए यह लंगडा बहाना वना कर कि बार्डर स्टेट पंजाब ही रहना चाहिऐ। हरियाणा नही बन सकता। मै समझता हू कि यह हमारा हक छीनना चाहता हूं स्पीकर साहब, जैसे कि मै पहले ही बता चुका हूं कि फाजिल्का ओर अबोहर के लोगों के रस्मोरिवाज उनकी बोली वगैरह हर तरह से हमारे दुख ओर सुख के साथ वाबसता है स्पीकर साहब, जब पंजाब वालों को इस बात का पता है कि वे लोग हरियाणवी हो ओर उनका हरियाणा मे चले जाना है। तो उन्होने उनका विकास नही होने दिया। यह भी उनके साथ

बहुत भारी बेइन्साफी की बात है इसके अलावा हमारा कई और बातो का ध्यान पंजाब के डिसप्यूट है मिसाल के तौर पर पानी का भी हमे वे पूरा शेयर नही दे रहे। बिजली का बांट मे भी उन्होने हमारे साथ ज्यादती की जो हैडवर्कस है उनके ऊपर वे कंटोल किए बैठे है। कायदा यह हेाता है कि एक चीज के अगर कई हिस्सेदार हो तो उसका कन्टोल मुश्तरका होता है। लेकिन हमारे जो मुश्तरका हैडवर्कस थे उनके ऊपर वे अपना कबुजा जमाए बैठे है। जब हरियाणा अपना हक जाहिर करता है तो वे कहते है कि कन्टोल हमारा होगा। मुझे एक बात याद आ गई हमारे देहात मे जब कई भाई हो जाते है ओर जब बडा भाई जिसके हाथों मे चाबियां होती है। वह टालमटोल करता रहता है। ओर जो नकदी वगैरह होती है उसको लुका छुपा लेता है उसके बाद वह कहता है कि मेरे इतने बच्चे है ओर बडी भारी जिम्मेदारी है। मुझे बडा मकान चाहिए। तो वह इस तरह चलाकी के साथ बडा मकान ले लेता है। ओर छोटे भाई को भूसे का कोठा दे दिया जाता है। उसकी बाद जो बूढा बैल होता है वह छोटे भाई को दे देता ओर जो अच्छा बैल वह अपने पास रख लेता। तो कहने का मतलब यह है कि जो बढिया चीजे होती है वह अपने पास रख लेता है। कहने का मतलब होता है कि जो चीजे बढिया होती हैं वह अपने पास रख लेता है। ओर बेकार चीजे वह अपने छोटे भाई को दे देता है। इसी ढंग से जब हम पंजाब से अलाहिदा हुए तो हमारे जो बडे भाई थे उन्होने बढिया चीजे अपनी पास रख ली ओर बची खुची चीजे थी वे हमको दे दी। फरनीचर हमको जो पुराना था वह दिया

बिजली ओर पानी वगैरह भी हमको दे दी। लेकिन जो भूस का कोठा मिला था हम ने मेंहनत रे उसको कोठी बना लिया। ओर जो बूढा बैल था उसे हम खिला फिला कर मजबूत कर दिया। उस वक्त हमारे देहात मे चालीस फीसदी बिजली थी हमने उसको सौ फीसदी पर पहुचा दिया। गर्जे की हर शोयबे मे हमने बहुत तरक्की कर ली है। और अब वे कहते है कि हरियाणा तो बहुत आगे निकल गयाा। ओर हमारी तरक्की देख कर उनको दर्द होता है अब जब फाजिल्का की बात आई तो वे इकट्ठे होकर कहते है कि उस पर हरियाणा का कोई हक नही है। ओर उस बात को अब लम्बा कर रहे है। जो चीज हमारी है ओर हमे वापिस नही दी जा रही है। लेकिन चीज उसकी जेब मे पडी है वह उसको लम्बा कर रहा है इसलिये कि वह उसे छोडना नही चाहते। तो इस किस्म की दलीले देना कि अभी वक्त नही है। इस मामले को दस साल ओर रहने दो। वह यह बात हम मानने के लिए तेयार नही है। हम क्यो रहने दे दस साल? क्भी कहते है कि वह प्रधानमंत्री का एवार्ड नही था। वह तो एक डिसीजन था। हम कहते है कि अगर डिसीजन था तो क्या उसके कोई मायने नही होते? कल को वे कह देगे कि सुप्रीम कोर्ट का डिसीजन है हम तो उसको भी नही मानते । तो मै समझता हू यह सारी बहानाबाजी है हमारी मोहतरिम प्राईम मिनिस्टर साहिबा ने जब एक एवार्ड दे दिया कि चंडीगढ पंजाब को दे दिया जाये ओर उसके बदले में फाजिलका ओर अबोहर हरियाणा को दे दिया जाये तो फिर पंजाब वाले इस बात मे अब कयों रूकावट डाल रहे है। जैसे मैने पहले बताया कि भाई तो

अलग होते आए है। एक चालाक भाई था उसने टोके की कीमत कम लगवा दी ओर जब अलहदा होने लगा तो कहने लगा कि यह मेरी बांट मे आवेगा। तो इसी ढंग से उन्होनें खुद तो इस बात को उठाया कि चंडीगढ हमें मिलना चाहिए। तो जब उनको चंडीगढ मिल गया ओर फाजिलका ओर अबोहर हरियाणा को दे दिया जाये। तो अब वह क्यो तडपते है। जब पानी की बात करते है तो कहते है कि हैडवर्कस पर भी हमारा कन्टोल होगा जब फाजिल्का लालडू डेराबस्सी ओर खरड की बात करते है तो कहते हे कि जो पंजाबी स्पीपिंग एरियाज है। चलो हम ज्यादा झगडे मे नही पडते हम कहते है कि जो हमारी प्रधान मंत्री ने फैसला दे दिया है उसको मान लेते है। इस लिए फाजिल्का ओर अबोंहर का इलाका हमे जल्दी से जल्दी मिलना चाहिए। क्योकि वहां के लोग भी हरियाणा के साथ रहना चाहते है। वह अब सम्भाल ले हम कही ओर अपनी राजधानी बना लेगे। हमे यहो के लम्बे चौडे मकान से कोई उनस नही है। कि यहां बैठै । हम तो अपने लिए टैट भी लगा लेगे। लेकिन प्राईम मिन्सिटर एवार्ड के तहत जो फाजिल्का अबोहर के इलाके हमे मिले है। वे हमे दे दो। फिर हम यहां से उसी वक्त जोने के तेयार है। ये चाहते है कि मामला और लम्बा हो जाये लेकिन हम ऐसे नही चाहते । हम तो चाहते हे कि यह मामला खत्म होना चाहिए ओर जिसे जो चीज मिली है उसे वह मिल जाये । फिर यह कमीशन बिठाने की बातें करते है ठीक है कमीशन बैठा लो। लालडू डेराबस्सी खरड ओर दूसरे कुछ इलाके जो है जिन्हें हम कहते है कि हिन्दी स्पीकिंग है और वे

कहते है कि पंजाबी स्पीकिग है उनके बारे में कमीशन बैठा लो क्योकि इनक`बारे मे झगडा है लेकिन जिन इलाको के बारे में पहले ही एवार्ड दिया जा चुका है वे हमें फौरन मिलने चाहिएं ओर एवार्ड की इम्पलीमैटेशन होनी चाहिए।

11.00 A.M.

चौधरी मनफूल सिंह (झज्जर): चेयरमैन साहब, इस सदन के सामने जो प्रस्ताव है इसकी सभी मैबर साहेबान ताईद तो करेगे ही लेकिन यह बात गौड़ साहब ने ठीक बताई है कि इस प्रस्ताव के पीछे हरियाणा के लोगो की भावनाएं है । इसकी बहुत ही लम्बी हिस्टरी है। आप 1947 से देखते चले जाओ चाहे सच्चर साहब चीफ मिनिस्टर हुए या प्रताप सिंह कैरों हुए हरियाणा के साथ सौतेली मां जेसा सलूक होता है। हम यह कहते रहे ओर चिल्लाते रहे कि जितने डिवैल्पमैट के काम है चाहे नहरों के है सडको बिजली आदि के है या स्कुलो कालेजो के है उनमे पंजाब के मुकाबले मे हमारे साथ बेइन्साफी हो रही है। उनके मुकाबले मे बजट का हिस्सा बहुत कम मिलता रहा। जनता से इस हाउस से प्रैस एण्ड प्लेटफार्म से यह आवाज आती है। कि हरियाणा के साथ सौतेली मां का सलूक हो रहा है। हमारी इस आवाज को हमारी भावनाओं को दबाने के लिए पंजाब सरकार ने दो रिजन कायम किए हिन्दी रिजन ओर पंजाबी रिजन लेकिन इन पर अमलदरामद नही हुआ। इन रिजन्स के बनाने का मक्सद यह था मुदा यह था कि भाषा के लिहाज से ओर डिवैल्पमैट के लिहाज से बजट का

हिस्सा बांटा जाए। लैंकिन ये हिन्दी हिन्दी रिजन ओर पंजाबी रिजन कागज पर ही महदूद रह गए। इसके बाद सच्चर फामूला बना लेकिन उसकी भी इम्पलीमैटेशन नही हुई आखिरकार जब हरियाणा की आवाज और ज्यादा बुलंद होती रही कि हमारे हकूक हमें नही मिलें, हमारे साथ अन्याय होता रहा। हमें बजट का हिस्सा नही मिला लेकिन हमारी कोई सुनवाई नही हुई । इसके साथ ही साथ पंजाब के लोगों की तरफ से मोर्च लगते रहे आन्दोलन होते रहे। कि हम पंजाबी सूबा मांगते हे। इनकी मांग को मानते हुए उनके डर से पंजाबी सूबा वजूद मे आया ओर इससे हमे हरियाणा मिला। अगर हम यह कह सकते है कि हमारी बाते मान ली गई । इसलिए हरियाणा बना यह गलत बात होगी। यह तो पंजाब वालों के डर से धमकियों से मरण व्रत की धमकियोां से पंजाबी सूबा बनाया गया था। जब पंजाबी सूबा बन गया तो हरियाणा तो वजूद मे आना ही था। हम तो पहले ही चाहते थे कि हरियाणा अलग हो लेकिन केन्दीय सरकार ने हमारी बात नही मानी पंजाब वालों के डर से दबाव से पंजाबी सूबा दिया था। इससे हम बहुत खुश थे। लोगों मैं बडी खुशी की लहर दौडी क्योकि हरियाणा वालों ने समझा कि इनसे पीछा छटेगा। पंजाब मे रहते हुए हमे अपने हक्क नही दिए थे अब हरियाणा बन गया है अब हमें अपने ढंग से राज चलाने का समय मिलेगा। यह ठीक है इसके बाद बाउंडरी कमीशन शाह कमीशन कायम हुआ ताकि जो आपसी झगडे थे बांउटउी के साथ साथ वे ठीक हो जायें ओर शाह कमीशन की जो रिपोंर्ट होगी वह दोनो राज्यों पर बाइडिंग

हेागी। जब शाह कमीशन की रिपोर्ट आई तो सारी की सारी खरड तहसील ने लिखा था कि फाजिल्का ओर अबोहर के इलाके हिन्दी बोलते है उनका रहन सहन पोशाक वगैरह हरियाणा से मिलती है। और इन पर हरियाणा का हक था। इसका क्या कारण था कि उस वक्त शाह कमीशन ने यह इलाका हरियाणा को नही दिया? उस वक्त के चीफ मिनिस्टर सरदार प्रताप कैरों इन बातों मे खासे अकलमन्द आदमी थे। उन्होनें 86 गांवों मे से 56 गांवों सरसा से काट कर मुक्तसर मे मिला दिए ओर हमारा लिंक इन गांवों से काट दिया था। ताकि जब कभी हरियाणा पंजाब से अलग हो तो ये गांव उन्हे यानी पंजाब को मिले। इन 86 गावों का हरियाणा से लिंक काट दिया वरना शाह कमीशन हमेदेता। जब शाह कमीशन की रिपोर्ट आई हम उस वक्त भी चिल्लाते रहे। शाह कमीशन की जो रिपोर्ट थी उसकी इम्पलीमैटेशन नही होने दी गई क्योकि पंजाब वालो ने शोंर किया कि खरड तहसील हमारी है इस शोर के बाद खरड तहसील तो उसी वक्त पंजाब को सौप दी गई ओर चण्डीगढ का मसला पैडिग रख दिया जिसको बाद में युनियन टैरटरी बना दिया गया। फिर चंडीगढ का मसला दोबारा उठाया गया दोनो तरफ से डिमोस्ट्रेशन हुई । हरियाणा वालो ने 10–12 लाख की तादाद मे डिमोस्ट्रेशन किया। यह इतना भारी डिमोस्ट्रेशन था कि दिल्ली के इतिहास मे इसकी कोई मिसाल नही मिलती । जनता के जजबात भडके हुए थे इसके बावजूद भी केन्दीय सरकार पंजाब वालो से डर गई ओर चडीगढ भी इनको सौप दिया गया और फाजिल्का और अबोहर हरियाणा को दिया

गया क्योकि शाह कमीशन ने कहा था कि यह हरियाणा का हक है लेकिन किसी वजह से इसका लिंक हरियाणा से तोड दिया गया था। फिर अबोहर ओर फाजिल्का का इलाका हमे दिया गया यह था प्राईम मिनिस्टर एवार्ड। (इस समय उपाध्यक्षा पदासीन हुए) डिप्टी स्पीकर साहब, पंजाब वालों का आज यह कहना है कि हमने इस एवार्ड को माना नही था। यह गलत बात है। इनके यहां दीवाली मनाई गई बडी खुशी मनाई गई ओर आज कहते है कि संह फतेह सिंह की जान बचाने के लिए मान लिया था। एक आदमी की जान को बचाने के लिए एक बात मान ली ओर जान बच जाने के बाद कह दिया कि हमने एवार्ड को माना नही । शाह कमीशन की रिपोर्ट के मुताबिक चण्डीगढ हरियाणा को नही मिला खरड तहसील नही मिली । ओर आज फाजिल्का ओर अबोहर को भी कहते है कि यह भी हरियाणा को न मिले। इसको हमे दे दिया जाय, कितनी अजीब बात है कि जब हरियाणा मे वजूद आया तो हमने सोचा था कि इन से हमारा पीछा छूट गया जो हमारे साथ इम्तियाजी सलूक होता रहा वह बन्द हो गया लेकिन नही छूटा। हिन्दी रिजन पंजाबी रिजन बन गएं शाह कमीशन बन लिया। प्राईम मिनिस्टर एवार्ड आ लिया लेंकिन हमारे साथ वही सलूक किया जा रहा है। जो पहले होता था। यह तो मैने पहले ही कह दिया कि केन्द्रीय सरकार हमेशा अकालियों के डर से हमारे हकूक पर छापा मारती रही है। वरना अगर ठीक भाषा के आधार पर इलाकों की बाट होती तो फाजिल्का ओर अबोहर खरड तहसील को हमें दिया तो कहते है कि हमने इस एवार्ड को नही माना है।

जब बांउडरी कमीशन दोबारा बैठेगा तो उस वक्त 14 15 गांवों को क्लेम करेगे। इन्होने पंजाबी सूबा मांगा था। इनके डर से हमारा इलाका हरियाणा रह गया था। अगर केन्द्रीय सरकार इनके डर से हमारा हिस्सा काट काट कर देती रही तो सारा करनाल का इलाका कट जायेगा । दिल्ली के पास कही थोडा बहुत छोड़ देगे। जिस तरह से उनकी मांग है उसको मान लिया जाएगा ओर हमारे पास बहुत कम इलाका रह जायेगा। इस तरह से हमारे हक को ये हडपना चाहते है। हम सब इस रैज्योल्यूशन की ताईद करते है। कि इस एवार्ड को इम्पलीमैट किया जाए। अगर ये इसी तरह से देते रहे तो राजस्थान के साथ जो इलाका है वे नही रहेगे। कही से यह न कह दे कि वह राजस्थान का इलाका भी उन्ही को दे दिया जाये इससे ये यह न कह दे कि वह राजस्थान इलाका उन्ही को दे दिया जाऐ। इससे उनकी इन्टैशन पर डाउट होता हैं इनकी इन्टैशन क्या है ? इन्टैशन यह है कि राजथान का वह हिस्सा जिसमें पंजाबी बोलने वाले कुछ भाई रहते है। इसलिए कह देगें कि यह भी हमारा हिस्सा है ये तो राजस्थान वाले इलाके पर भी अपनी नजर रखते है।

(इस समय बहुत से सदस्य बोलने के लिए खडे हुए)

उपाध्यक्षा: चौधरी शिव राम वर्मा जी आप बोंलिए।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता: डिप्टी स्पीकर साहिबा, मै आप से भी ओर शिव राम वर्मा जी से भी रिक्वैस्ट करूंगा कि मेरा

हाई कोर्ट मे केस लगा हुआ है ओर मुझे वहां जाना है अगर मुझे टाईम दे दे तो बडी कृपा होगी। (व्यवधान)

श्री गुलाब सिंह जैन: डिप्टी स्पीकर साहिबा, मेरी दरख्वास्त है कि दौलता साहब से पहले मुझे टाईम दिया जाये। (व्यवधान)

उपाध्यक्षा: दौलता साहब आप बोलिए।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता (**बेंरी**): डिप्टी स्पीकर साहब, यह रैज्योल्यूशन जो लीडर आफ दी अपोजिशन ने हाउस के सामने रखा बडा गम्भीर रैज्योल्यूशन है । इस पे एक लफ्ज भी गलत बोला जाये या एक लफ्ज है लेकिन गलत तरीके से बोला जाये वह नुकसान दे सकता है (व्यवधान) जिस काबलियत से उन्होने यह रैज्योल्यूशन रखा है। मै उसके लिए उनको मुबारिकबाद देता हूं उन्होनें बहुत ही काबलियत के साथ इस केस को जिस काबियित के साथ पुट किया जाना चाहिए । मै उन आर्गुमैटस को दलील को दोहराये बगैर नही रह सकता। मै यह अर्ज किया चाहता हूं कि हमारे जो दोनो चीफ मिनिस्टर जिस तरीके से इस मसले को सुलझाने की कोशिश कर रहे है। वे दोनो ही मुबारिकबाद के मुस्तहक है । बगैर तलखी पैदा हुए आपस मे मिलते है। बात करते हैं लेकिन इस बात के करने का मिलने का कोई गलत अन्दाजा लगाए कि हरियाणा के लोग अपने स्टैड से

या हरियाणा के सी एम अपने स्टैड से हट गये तो गलत बात होगी।

उपाध्यक्षा महादेय, मैने सवाल किया था ओर लीडर आफ दी हाउस ने गाईडैन्स दी थी हमे कि ये स्टेट्स क्यो बनी ओर कैसी बनी। इस पर भी मुझे बोलना है मेरी अर्ज यह है कि जबान एक बहाना है मजहब एक बहाना है मार्कस जो लिख गया कि हर तहरीक के पीछे आर्थिक तहरीक है कोई न कोई आर्थिक वर्ग है। आज मै ऐक्सप्लाइटिंग क्लास का तर्जूमा नही करूंगा हिन्दुस्तानी मे उससे कुछ आदमी नाराज हो जाते है। मै तो वही शब्द इस्तेमाल करूंगा जो सोश्योलोजी ही इस ग्रेट अथोरिटी ने इस्तेमाल किए। यह आक्सफोर्ड पब्लिकेशन है ओर 1961 मे न्यूयार्क से छपी है। (व्यवधान) मोहतरिमा पंजाबी को कोई खतरा नही थां। पंजाबी बहादुरगढ तक पढाई जाती थी। कांगडा के परले सिरे तक जहां बर्फ से दबे हुए इलाके है पंजाबी पढाई जाती थी जिस वक्त पंजाबी सूबा बना। पंजाबी सुकड कर उस हलके मे रह गई जहां आज पंजाब है यह तहरीक पंजाबी के लिए नही थी। यह तहरीक मजहब के लिए भी नही थी। मै दूसरे नुक्तानिगाह से इस किताब को लाया हू। इसमे दो चैप्टर है पढने के । मै अपने लफ्ज नही बोलूगा। मै डर गया कल के बाद इसका पहला चैप्टर है, ''what is behind these linguistic states'' ओर दूसरा चैप्टर है इसके पीछे? ये लोग क्यों लिग्विस्टिक स्टेट मांग रह है। ओर दूसरा चैप्टर है ''New Claims to Power" यानी देहात के वर्ग ओर

New Claims to Power के स्पोक्समैन जगजीवन राम ने आज कांगेस वर्किंग कमेटी मे जो कुछ कहा है। उसे वे अपने आप पढ ले मै नही पढाना चाहता । (व्यवधान) हिन्द समाचार मे है तो ठीक है लेकिन स्टेटमैन मे पढने के काबिल है यह डिमाण्ड मालिक किसानों ने उठाया बनियों के खिलाफ जो हर जगह कब्जा कर चुके है। हरियाणा के एम पीज ने भी नेहरू को बताया कि हरियाणा प्रोप्राइटर्ज कम्युनिटीज की राइट फोम ट्रांवनकोर कोचीन टू पंजाबं। हैरीसन लिखता है कि म्रदास मे लिग्विस्टिक स्टेट की मांग आन्धा वालों की डिमांड आर्थिक डिमांड है। किनकी कामाज रैडीज ओर पेजैन्ट प्रोप्राइडर्ज ब्राहणज की किन के खिलाफ है यह चटयार लम्बीयार राजगोपाल एण्ड अदरज कमर्शियल कम्युनिटी जो ब्राहाणौ की है तमाम नोकरियों को तमाम मैम्बरियो को अपनी दौलत से अपने रूपए से ज्यादा टिकटें ले लेना मैनेज कर लेना उनके खिलाफ बगावत है। तामिल के पेजैन्ट प्रोप्राइटर्ज की जमीदारों की किस के खिलाफ कमर्शियल कमेटी चटियार ओर नम्बीयार के। अगले चैप्टर मे वे गुजरात और महाराष्ट्र को लेते है उसमे गुजरात ओर महाराष्ट्र मे तफसील के साथ दिया है कि पारसीज और गुजराती बनियों को छोड के तिजारत पर कितनी परसैन्टेज किस की कितनीथीं । यह डिमाण्ड थी महाराष्ट्र और गुजरात के अनिल ब्राहाण जिससे मोरार जी देसाई ओर पूज्य स्वामी दयानन्द जी थे जिस बिरादरी से ओर पेजैन्ट प्रोप्राइडर्ज की । आगे लिखा है अनिल ब्राहाण गुजरात के ओर विनायक ब्राहाण महाराष्ट्र के ओर उनके साथ 96 घराने पजैन्ट प्रोप्राअटर्ज के

शिवायों कुनबे के इन लोगों की डिमांड थी। चितपवन ब्राहाण की ताकत खत्म या कम करने के लिए। You talk of any person other than Vinaik and Chavans. he must be a Chitpavan Brahaman of Maharashtra. ये कहते है कि हैरिसन कि लिंग्विस्टिक डिमाण्ड महाराष्ट्र ओर गुजरात की कुछ भी नही थी। मारवाडियों ओर गुजराती बनियों का जो कन्टोल दोनो स्टेट्स पर था उसे अनिल ब्रहाण की पजैन्ट प्रोप्राइटर्ज कम्युनिटी आफ गुजरात एण्ड पेजैन्ट प्रोप्राइटरी कम्युनिटी आफ महाराष्ट्र पंसद क्यों नही करते थे। विनोबा से एक इन्ट्रव्यू इसमे बडा वन्डरफूल लिया है। विनोबा भावे एक मारवाडी से कहता है कि ऐ मारवाडी नू रहता है महाराष्ट्र मे हजार वर्ष तक रहेगा खाता यहां से पीता यहां से है माचिस तक मेरे से खरीदी जाती है लेकिन जब तुम अपनी लडकी का वर तलाश करते हो तो लडका तलाश करते हो तो एक हजार मील ंफिर मारवाड मे जाते हो। कोन तूमको बरदास्त करेगा ? फिर मोहरतरिमा यूपी मगरबी का डिमांड बहुत खुबसूरती के साथ दिया है। ये यूपी के उरले हिस्से का डिमांड हैं आपके कमीशन या हमारा डिमाड नही है। ये यूपी के उरले हिस्से का डिमांड हैं रिपोर्ट है आपके कमीशन की सैन्सस कमीशन की। अजगर कम्युनिटी क्या है? अजगर अलीफ से कौन अहीर ज से जाट ग से गुज्जर ओर गडरिया ओर इन तमाम कम्युनिटीज का कम्बीनेशन क्या है? यह आपकी सैन्सीज रिपोर्ट 1961 का हवाला देते हुए लिखता है ये लोग यह अजगर अपना दुम हिलाने लगा है। बौर्डर स्टेट्स मे (जो पंजाब की थी हमारी स्टेट) ओर कोई ताज्जुब नही

कि कभी न कभी यह भी अगल स्टेट मांग ले जिसका नाम हरियाणा होगा। यह किताब 1961 में छपी उस वक्त हरियाणा नही बना था इन तमाम मुतालबात के पीछे जो री–आर्गेनाइजेशन पर स्टेट बनी है उसके पीछे इख्तसादियात का हाथ है जमाती जदोजहद का हाथ है जो छोटु राम ओर मार्क्स बहुत पहले लिख गए ओर समझने वालों को समझा गए । तो अब खास करके पंजाब के जमीदार भाई सुन ले। हकूमत करना वे भी जानते है ओर हकूमत करना हम भी जानते है। फौज की नौकरी वे भी करते है। ओर फौज की नौकरी हम भी करते हैं । जरायम पैशा वे भी है ओर उनसे कम जरायम पेशा हम भी नही है। दोनो तरफ डिजायर है आज चण्डीगढ को नतो हरियाणा के जाट लेना चाहते है ओर न गुज्जर लेना चाहते है। मुझे मालूम है क्यों आज चण्डीगढ के लिए पंजाब मांग कर रहा है। जो उस वक्त जान लडा रहा था। सीधी सी बात है। जो पंजाब का पेजैन्ट प्रोप्राइटर है वह हकूमत करना चाहता है। इधर हरियाणा का पेजैन्ट प्रोप्राइटर हकूमत करना चाहता है। क्योकि उसका हक हैं उसकी आबादी है ओर कोई गुनाह नही करता अगर उसमै यह डिजायर आती है हकूमत करने की डैमोक्रेसी में अडल्ट फ्रैनचाइज में Everybody who has got a vote had the right to dominate. Bothsides now want Fazilka a rural Constituency and not Chandigarh which means urban Constituency of urban Punjab Hindus. Neither Punjabi Sikh likes them not Ajgar of Haryana wants them. अगर किसी को चुभती है तो चुभा करे लेकिन पंजाब के जमीदारों को यह बात साफ मालूम है होनी चाहिए। कि चाचा

ताऊ के भाई है वे भी हकूमत करना चाहते है। ओर हम भी हकूमत करना चाहते है। वे फौज की नौकरी करते है हम भी फौज की नौकरी करते है। मैन एक दफा चौधरी सूरजमल ओर साथ एक ओर वकील थ हमने बहिन जी से कहा था बहिन जी अगर न्यूसैंस वैल्यू या बेहुदा बनना ही क्रेडिट की बात है तो हम बन के दिखाएं ? प्राईम मिनिस्टर ने कहा न भाई । मै मनफूल सिंह जी को कुरैक्ट करना चाहता हूं कि पंजाब से डरते नही। नैशनल इन्टेग्रेशन का क्वेशन है पंजाब को किसी ने चण्डीगढ नही दिया। सिंखो को दिया था। जब माइन्योरिटी का क्वैशन आता है तो माइन्योरिटी से फेथ रखना पडता है उस वक्त जब ये सिख बतौर माइन्योरिटी की कहे हिन्दुस्तान का मुसलमान मैसूर के चीफ मिनिस्टर ओर सारे ही इसके साथ हो जाते है। They take advantage of being a minority community of India. In national interest they get prefrential treatment and that we should not resent. वरना प्राईम मिनिस्टर किसी डर से डरने वाली प्राईम मिनिस्टर नही है। कुल्लब लौबी को एक फुट रखा हुआ है इतनी ही दूर कराड़ लौबी को दो फुट उधर रखा हुआ है। प्राइसिज के बारे में कह दिया कि खबरदार ! इससे ज्यादा प्राइसिज नही दूंगी। सारे चीफ मिनिस्टर चुप होकर आ गए। आज कह दिया कि यह जो ब्लैक मार्किट चलती है। हाई प्राइसिज है ये जल्दी से जल्दी खत्म करो। खाने के लिए अनाज का स्टेट ट्रेडिंग करे। इतनी मजबूत प्राइम मिनिस्टर डरती नही है वे इस माइन्योरिटी वालें क्वेशन से दब गयी ओर दबी एक बहुत बडे काज के लिए।

आप इमैजन करे। सन् 1971 में प्राईम मिनिस्टर पावर मे न आती ओर काग्रेस (आर) पावर मे न आती तो हिन्दुस्तान की पाकिस्तान से बुरी हालत होती । मिट्टी खराब होती। कुछ मुश्किलात है । हमें माइन्योरिटी का कनसैशन प्राईम मिनिस्टर पर छोड़ दिया चाहिए। लेकिन मै यह बात हाउस में साफ अर्ज किए देना चाहता हूं बहिन जी जो मैने प्राईम मिनिस्टर को 1962 मे कही थी। यह पार्लियामैंट की रिपोर्ट है। मैं यह पढ़कर अपनी बातों को खत्म करूंगा। मैं ज्यादा टाईम नही लेना चाहता। हमारे प्राईम मिनिस्टर पंडित नेहरू जी में यह खूबी थी। वे हमारे लीडर आफ दी हाउस भी थे। और मेरे लीडर आफ दी पार्टी भी थे। यह मेरी सन् 1962 की तकरीर थी। उस वक्त मै कांग्रेस में था। अगर मैं वे लफ्ज अब यहां पर कहूं तो शायद शाम तक मेरे का घर भी जाना मुश्किल हो जाए। वे बडे भारी डैमोक्रेट थे। बहरहाल मै ऐसी बात कह सकता था ओर मुझे फख्र है कि मैनें उन लोगों के साथ किया । उपाध्यक्ष महोदया, सन् 1962 मैं एक सिख लीडर ने भूखहडताल की। पंडित जवाहर लाल ने हवाई जहाज भेजा आधी रात के वक्त। उसमें महाराजा पटियाला और प्रकाशवीर शास्त्री से हारे हुए हरियाणा के लीडर ये दोनों साथ थे। दूसरे दिन सुबह जाते ही प्लानिंग कमीशन की रिपोर्ट पर बहस की । पंडित जी ने अपने आप ही कहा कि पंजाब का अजीब मसला है। पंजाबी तो हरियाणा की सारे ही पंजाब की डौमिनेट लैंग्वेज है। पंजाबी को ही क्यों नही रोहतक से लेकर कांगड़ा तक सारे ही पंजाब की भाषा कर देते? मैनें इस बात पर उठकर कहा, वे अंग्रेजी के

लफ्ज है, जाने दूंगा। अगर आप चाहें तो मैं हाउस की टेबल पर रखने के लिए तैयार हूं।

"Look here, Mr. Prime Minister, you are the leader of the world, not of India. You are my Prime Minister. You are the leader of my party also. But you are no body to tell me what is my language? This is my right to decide what is my language; what is my religion."

उस वक्त स्पीकर साहब थे सरदार हुकम सिंह। मैंने कहा सरदार हुकम सिंह जी आप ओर में मिंटगूमरी के साथ ही सामान लाद कर आये थे। मुझ को हक है कि अपनी जगह बदल सकता हूं। आपका हक है स्पीकर साहब, आप अपने मजहब का बदल सकते हैं। कल का केस कटा कर आप हिन्दु बन सकते है। मैं हूं। मेरा एक लडका सिख है। एक लडका हिन्दु है। वह लडका जब अकालियों का जलूस निकलता है। तो वह सिख ही नही वह तो कम्बखत अकाली दल भी है। तो वह बडे रोष के साथ जाता है। ओर कहता कि साडा जलूस निकलदा पियाऐ। मैंने प्राईम मिनिस्टर से कहा कि You are no body to tell me what is my language. It is my might to saw what is my language. Through census, I had told that in Haryana which constitutes 42 % population of Punjab, we speak Hindi. Yes, Punabi Hindi speaks Punjabi but he writes Hindi and he justifies to write Hindi. when one Akali says that Gurmukhi in Punjabi Lipi is a part of his religion, then the Hindi has evey right to stand up and say: Look here, if Punjabi in Gurmukhi script is your

language, then I will speak Punjabi, I will deny Punjabi to be my language and I will accept Hindi as my Language.

चौधरी शिव राम वर्मा (नीलोखेडी): उपाध्यक्ष महोदया, प्रधान मंत्री ने अबोहर ओर फाजिल्का के बारे में जो एवार्ड दिया था। उसको जल्दी लागू करने के लिए विधान सभा के सामने प्रस्ताव आया हुआ है। आज उसी प्रस्ताब पर चर्चा चल रही है। मेरे साथी माननीय मेहर चन्द जी ने एक बात अपनी स्पीच में शुरू मे कही थी। मै उसके बारे में लम्बी चौडी बातें तो नही करता क्योकि वे सारी बातें बीच में आती रहेगी मै उनको यह कहना चाहूंगा उस बीमारी की छड यह है क उनके घर मे मैल भरी पडी है अगर उन्हें यह जड बिजली की रोशनी में भी दिखाई न दी तो मैं उन्हें दीपक दे दूंगा। वे सारा घर देख ले ओर यह जान ले कि वाकई उनके घर में है या नही । उनका सारा घर रोग से भरा पडा है। ओर इसी कारण से यह सारा झगडा हैा। (व्यवधान) सूरज की रोशनी में ही सब कुछ आपके सामने आ जाऐगा.....

चौधरी मेहर चन्द: वह कौन सा घर है?

चौधरी शिव राम वर्मा: आपका घर कांग्रेस है। (व्यवधान)

चौधरी मेहर चन्द: मुझे आपका दीवा पसन्द नही है।

चोधरी शिव राम वर्मा: नही देखगे तो अन्धेरे में रहेगे ओर ठोकरे खायेगे। (व्यवधान) डिप्टी स्पीकर साहब, जिस समय

हरियाणा और पंजाब का बंटवारा हुआ उस समय यह झगडा शुरू हुआं। यह इतिहास सब के सामने है। हरियाणा ओर पंजाब का बंटवारा कयों हुआ? कई साथियों ने इस बारे में बाते कही थी है और ये सबके सामने भी है। हो सकता है। इसमें और बाते भी हो। चाहें वह भाषा का बहाना लेकर हुआ हो लेकिन इसके अन्दर एक ही बात काम कर रही थी। ओर वह थी आर्थिक भेदभाव की । उस समय जो विकास के काम थे। उनमे भेदभाव था। उस परले इलाके में जो अब पंजाब में है। और उसे परले इलाके में जो अब पंजाब में है और उस उरले इलाके मे जो आज हरियाणा मे है। आर्थिक भेदभाव था। इस कारण हरियाणा के लोग भी यह चाहते थे कि हम जल्दी से अलग हो जायं। मै अपने साथी मेहर चन्द जी की जानकारी के लिए एक बात बता देना चाहता हूं।

कृषि मंत्री (चौधरी भजनलाल): फिर मै भी कुछ कहने लग जायेगे ओर मुश्किल हो जायेगी।

चौधरी मेहर चन्द: कोई बात नही जो चाहे कह ले इन्हें खुशी छुट्टी है। मैं इन्टरफीयरैन्स तो नही करना चाहता लेकिन मै यह कहना चाहता हूं कि सिर्फ एक मिनट लुगा ओर इनकी बातों का जवाब दूंगा।.....

चोधरी शिवराम वर्मा: डिप्टी स्पीकर साहिबा, मै अपने भाई को कोई कडवी बात नही करूंगा। बहुत अच्छी बात कहूंगा। मै उनको केवल यह जानकारी देना चाहता हूं। कि जब हरियाणा

ओर पंजाब के बंटवारे का आन्दोलन चल रहा था। तब चौधरी साहब का तो मुझे पता नही किस कोने में बैठे थे। मैनें अपनी जिले में कन्वीनर के तौर पर काम किया है। हरियाणा बनवाने केलिए जलसे जलूसों मीटिगों ओर लोगों को आर्गेनाइज करने का प्रयत्न करता रहा है। उस समय केवल हमारे मन मे ही यह बात नही थी बल्कि हम जलसों में भी यह कहते थे कि हरियाणा बने। पंजाबी सूबे का सवाल उठने के बाद जब नन्दा जी ने पार्लियामैट मे यह बात अनाउन्स कर दी किहम पंजाब के पंजाबी भाषी इलाकों को पंजाबी सूबे के तौर पर अलग सूबा बनाना चाहेगे। उस समय हमने कहा कि पंजाबी सूबा तो बनेगा ही हरियाणा ही बनना चाहिऐ। उस समय हरियाणा का नाम भी नही था। उस समय लोगो ने कोई अलाहिदा किस्म की या भेदभाव की बात नही की। सभी प्रकार के लोग इस मांग में शमिल थे और यह सूबा सभी की मेहनत से बना है। उस समय हम चाहते थे कि एक मांग आ ही गई है ओर अब चाहे अकाली पीछे हटें भी ओर अपना मुतालबा भी छोड दे कि हम पंजाबी सूबा नही मांगते । हरियाणा के लोग हरियाणा जरूर मांगेगे। लोगों ने यह देख लिया था कि जब तक हरियाणा पंजाब के अन्दर रहेगा तरक्की नही करेगा इसलिए हरियाणा की मांग बहुत दिनों से लोगों के दिलों मे चल रही थी । अग्रेजो ने हरियाणा के टुकडे इसलिए किए थे कि हरियाणा के लोग हर बात मे मजबूत है। अलग अलग पडने से फिर से इकट्ठे न हो सकने के कारण सरकार के खिलाफ कोई आन्दोलन नही चला सकेगे। 1857 का जो गदर था जिसको मै आजादी की लडाई

कहता हूं वह हरियाणा से ही शुरू हुआ था और यह आग हरियाणा से ही भड़की थी ओर दिल्ली के चारों ओर घूमती रही थी। इसी कारण से अग्रेजों केदिल में हरियाणा केल लोगों के लिए इस प्रकार के विचार उत्पन्न हुए कि हम इन लोगों को अलग अलग बिखेर दे और इन इलाकें को इस तरह से इधर उधर मिला दे कि यह पिछडा हुआ पडा रहे। इसका कुछ हिस्सा पंजाब के फन्टियर के इलाके के साथ मिला दिया गया। कुछ इलाका पूर्वी ओर पश्चिमी यू पी के साथ जोड दिया गया कुछ इलाका रजवाडों में शामिल कर दिया गया ओर कुछ इलाका दिल्ली के आस पास रखकर अपने कन्टोंल में ले लिया गया। इसी तरह से हरियाणा के चार टुकडे कर दिए गए । हरियाणा की मांग बडी देर से सुलग रही थी लेकिन हरियाणा के लोग इकट्ठे नही हो सके थे। उन्हें इस बात का मौका भी नही मिला था लेकिन जब यह मोका आया तो हरियाणा के लोगों ने अपनी आवाज उठाई । क्यों? यह सोचकर उठाई कि अब आवाज उठाने के लिए मौका आया है। मौका चूकने के बाद पता नही फिर कब मौका मिलेगा ओर मिलेगा भी या नहीं। यह पता नही था। इसी कारण हरियाणा बनाने के लिए आन्दोलन चला। पहले हरियाणा का कही नाम नही था। लेकिन बाद मै हमें हरियाणा मिला। अगर यह आन्दोलन न चलता तो हो सकता है कि पंजाबी सूबा ओर आगे ते बनता कुछ इलाके राजस्थान में चले जाते और कुछ इलाके दिल्ली के साथ जोड दिए जाते ओर हरियाणा का कही नाम भी ने मिलता । हरियाणा के लोगों के आन्दोलन की वजह से यह हरियाणा बना ओर फिर

चण्डीगढ का पंजाब ओर हरियाणा की सीमा बनाने का बंटवारा करने का सवाल उठ खडा हुआ उस सवाल के अन्दर जहां सीमा के दूसरे झगडें थे वहों चण्डीगढ का झगडा खास तौर से जोडा गया क्योकि चण्डीगढ दोनों राज्यों के लिए एक तरह से राजधानी बन सकती है। हालांकि दोनो राज्यों के एक कोने की तरफ पडता है। हरियाणा के अन्दर तो कोई ऐसा शहर भी नही है। जिसमें हरियाणा की राजधानी बनाई जा सकती। लेकिन पंजाब में ऐसे कई शहर थे जहां राजधानी बन सकती। इस कारण एक झगडा खडा होने की वजह से केन्द्र सरकार ने शाह कमीशन अप्वायंट कर दिया। शाह कमीशन कोई मामूली कमीशन नही था। उसमे सुप्रीम कोर्ट के एक जज थे जो बाद में सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस बने। तो उनकी अध्यक्षता मे कमीशन की सारी कार्यवाही चली ओर दोनो तरफ की बात सुनने के बाद जब उन्होनें निर्णय किया उसमें चडीगढ यानी खरड तहसील सारी हरियाणा को दी गई ओर उसमें यह लिखा कि लालडू ओर डेराबस्सी हिन्दी भाषी हैं अम्बाला के साथ इनका आर्थिक संबंध हैं परन्तु उसके अन्दर जो रैफरैन्स था। उसके अन्दर जो तरीका बनाया इलाके बांटने का उसमें तहसील को युनिट बनाया गया। राजपुरा तहसील अगर सारी गिने तो उसमें पजाबी भाषा ज्यादा बनते है। और डेराबस्सी के थाने ओर दूसरे इलाके जो हिन्दी भाषा थे हमसे चले गए। अबोहर और फाजिलका के बारे में अभी पंजाब के मुख्य मंत्री ज्ञानी जैल सिंह ने कहा कि अगर हरियाणा को यह इलाके दे दिए तो फिर हमारा राजस्थान से ताल्लुक टुट जाएगा और हरियाणा एक

सीमावर्ती प्रान्त बन जायेगा तो इससे क्या मतलब है उनका? पता नही उन्होनें यह बात जानबूझ कर रही है। क्या उन्होने हरियाणा के लोगों की शूरवीरता को चलैन्ज किया क्या हरियाणा के लोग सुरक्षा करना नही चाहते । लेकिन मैं समझता हूं कि इन बातो को कहने का कोई मतलब हैं। हम सीमा की रक्षा करना अच्छी तरह जानते है। हरियाणा के लोगों की शूरवीरता किसी से कम नही है। जहा भी हरियाणा की फौजे गई चाहे वे अग्रेज के राज मे लडी या दूसरे मुल्को में गई या स्वतन्त्रता के बाद तीन बार यहां लडने का मौका मिला उनहोने जाकर नाम कमाया ओर कभी पीठ नही दिखाई। इसलिए ऐसी बात कहना हरियाणा की बेइज्जती करने की कोशिश करेगा। यह कहना है कि राजस्थान से हमारा तालुक टुट गया। यह भी मन में कोई ओर बात दिखाई देती है। जैसे चौधरी मनफूल सिंह ने कहा कि उनकी आंख राजस्थान के गंगानगर ओर उसके आस पास के इलाके पर लगी हुई है वे समझते है कि वह इलाका पंजाब मे मिल सकता है। यह एक साजिश है कि हरियाणा के साथ जो पंजाब का हिन्दी भाषी इलाका मिलता है। उसको तोडने की साजिश है उसकी कंटिगवटी को खत्म करने की साजिश है। सरदार प्रताप सिंह बहुत सियाने थे। वे बहुत आग की सोचते थे। उनके ध्यान में यह बात थाी कि कभी न कभी हरियाणा अलग होगा। इसलिए पंजाबी सूबे को ज्यादा फैलाने की कोशिश करते रहे थे ओर वह कोशिश मै थे और उनका यह प्लान था कि जहां तक हो सके अधिक से अधिक इलाका पर अपना होल्ड रख सके। जिनको बाद में हम पंजाबी इलाका क्लेम

कर सके। इसी ढंग से तहसील फाजिल्का के 96 गांव हरियाणा की कंटीन्युइटी तोडने के लिए तहसील मुक्तसर मे मिला दिए ओर राजस्थान की सीमा के साथ फाजिल्का का इलाका हटाकर तहसील मुक्तसर का बना दिया था ओर उस हिन्दी भाषा क्षेत्र को जो कि हरियाणा के बीच मे था उन्होने पंजाब का इलाका पंजाबी भाषी के तौर पर बना दिया यानी हरियाणा के साथ जा मिलान था जो कंटीन्युइटी थी उस को तोड दिया। उस समय दिमाग मे यह चीज थी कि कभी यह इलाका हरियाणा मे जाने की कोशिश करेगा इसलिए यह स्थिति बना दी जाये। कि यह हरियाणा मे मिले नहीं। इसलिए जो मिलान तोडा गया वह एक्चुयली पंजाबी सूबा बनने की एक कडी थी । लेकिन शाह कमीशन ने जो एक फेसला दिया उसमें हरियाणा के साथ केन्दीय सरकार ने अन्याय किया कि जो हरियाणा को मिला था उसमें से तहसील खरड से चडीगढ को निकाल कर अपने पास रखा ओर बाकी खरड तहसील पंजाब को दी और पंजाब से कुछ नही काटा। यह कहां का न्याय हैं? उस समय जो सरकार थी वह बोली नही। लापरवाही के कारण ऐसा किया था कोई ओर कारण था। उसने परवाह नही की ओर वह खरड तहसील पंजाब को चली गई । चडीगढ को केन्द्र ने अपने पास रखा। उस समय चडीगढ ओर खरड हमको मिल जाते थे लेकिन हमारे चुप रहने के कारण केन्दीय सरकार के दिमाग मे यह बात बैठ गई । कि पंजाब आन्दोलन करने में मजबूत है। मजबूत भाषा को समझने का जो तरीका बना लिया गया यह कोई अच्छा नही है। शराफत की भाषा समझना ज्यादा अच्छी बात है। यदि

आन्दोलन की भाषा से कोई काम होना है तो देश मे शान्ति कैसे हो सकती है? लेकिन केन्द्र ने सोचा कि पंजाब आन्दोलन करने मे तगडा है। इसीलिये पंजाब को चुप करना चाहिए। ओर हरियाणा तो बोलता नही है। ये लोग इकट्ठे ही नही होता है। आपस मे ही लडतें रहते है। इसलिए इनकी कोई बात नही है पंजाब चुप रहना चाहिए। ओर इसीलिए हयिाणा का इलाका पंजाब को दे दिया ओर झगडा चलता रहा।

उपाध्यक्षा: चौधरी साहब, दूसरे मैबरों ने भी बोलना है इसीलिए आप थोडा ब्रीफ कर दे।

चौधरी शिव राम वर्मा: मुझे को बोलने की छुट्टी दी गई है। कि जितना बोलना चाहो बोलो।

कई आवाजे: इनको बोलने दीजिए।

चौधरी शिव रामवर्मा: तो अगर उस समय हमारी तरफ से कुछ मजबूती दिखाई जाती तो हमारे साथ यह अन्याय न होता। उसके बाद 1969 में फिर दोबारा चडीगढ का झगडा खडा हुआ । पजाब की कोशिश थी कि चडीगढ का हम ले ले लेकिन उस समय अपनी सरकार बन चुकी थी। उससे पहले 1967 मे हरियाणा की अलाहिदा असैम्बली ने अपना एक सर्वसम्मत प्रस्ताव पास किया शाह कमीशन का सारा फैसला लागू करने के बारे में कि वह सारा लागू होना चाहिए। वह सारे सदन का फैसला था। उसके बाद 1969 मे जब हरियाणा यह आन्दोलन चला तो हरियाणा

के लोगों ने अपनी तरफ से कोशिश की कि आन्दोलन का जवाब आन्दोलन से दिया जाऐगा तभी केन्दीय सरकार समझेगी। यहा के लोगों मे इस प्रकार की जागृति आई ओर उन्होने आन्दोलन किया प्रदर्शन किया। अकालियों ने चढीगढ में प्रदर्शन किया ओर हरियाणा के लोगों ने दिल्ली मे अकालियों से भी बैठ चढ कर प्रदर्शन किया ओर उस आन्दोलन का असर केन्दीय सरकार के दिमाग मे बैठ गया कि पंजाब ओर हरियाणा आन्दोलन करने में बराबर है उस समय मै हरियाणा प्रदेश का प्रधान था।

मुख्यमंत्री (**चोधरी बंसीलाल**): अब भी तो होगे क्या अब निकाल दिया? (हंसी)

चौधरी शिव राम वर्मा: मै समझता हू कि मुख्यमंत्री महोदय को हर जानकारी पहुचती होगी और वे थोडी बहुत जानकारी इस बारे मे रखते होगें । यह तो छोटी सी जानकारी है।

चौधरी बंसीलाल: थोडी नही रखता पूरी रखता हू।(हंसी)

चौधरी शिव राम वर्मा: मैने उस समय इनको चिट्ठी लिखी थी कि हरियाणा प्रदेश जनसंघ चडीगढ के आन्दोलन के बारे में सरकार के हर ऐक्शन मे पूरी तरह सहायता करेगा। अगर इस संबंध मे कोई आन्दोलन चलाएगें तो हम पूरा सहयोग देगे। आप चाहें तो मीटिंग कर सकते है ओर जो फैसला होगा हम

उसमें पूरी मदद करेगे। किसी प्रकार की कोई समस्या होगी तो उसको हल करने मे पूरा सहयोग देगे। लेकिन मुझे उन पत्रों का कोई जवाब नही मिला। उस के बाद फिर हमारे जो एम एल एज थे उन्होने भी इनको चिट्ठी लिखी कि यदि केन्द्रीय सरकार हमारे हरियाणा का मुतालबा नही मानती तो उस पर दवाब डालने के लिए साफ तौर पर यह बात कही जाए कि हरियाणा को सम्भालने की हमारे बस की बात नही है। हमारे ये इस्तीफे सम्भालिये ओर उन्हानें कहा था कि हम भी आप के साथ इस्तीफे देने के लिए तैयार है।

चौधरी बंसी लाल: लेकिन चौधरी साहब हम ने इस्तीफे नही दिए हम ने तो वेसे ही सम्भाला । इस्तीफा तो चौधरी रिजक राम दे कर आए थे।

चौधरी हरिद्वारी लाल: वह भी पछता रहे है।

चौधरी शिव रामवर्मा: उस बात का हमने भी बहुत प्रचार किया। मै उस वक्त साथ साथ एक मिसाल भी देता था। मुख्यमंत्री साहब अगर बुरा न माने तो मैं उसे फिर दोहरा देता हूं। मै यह कहता था कि हमारे मुख्य मंत्री चौधरी बंसीलाल जी चडीगड के बारे में स्टैड लिए हुए है। वह बहुत मजबूत स्टैड है। ओर यह उनका स्टैड मजबूत रहना चाहिए। इसके साथ एक किस्सा है जो मै बताना चाहता हूं एक दफा एक बुढिया गठडी लकर कर रही थी। रास्ते में एक नाला आ गया जिस मे कि थोडा पानी था एक

नौजवान वहांपर खडा था बुढिया ने कहा बेटा मेरी गठडी लेकर मेरा हाथ पकड कर मुझे नदी के पार निकाल दे तो वह कहने लगा कि ताई मै तो डूब जाऊंगां? उस बुढिया ने कहा कि पानी थोडा है। तू कैसे पायेगा। इस बात को सुन कर वह कहने लगा कि ताई इसमें तो गोडे गोडे पानी है जब मैने डूबना हो तो मै कोरे कालर में डूब जाऊ। इस लिए यहां पर काग्रेस की सरकार है ओर केन्द की भी काग्रेस की सरकार है तो कही ऐसा नहो हमारे चीफ मिनिस्टर साहब वैसी ही बात करके दिखा दे। सन् 1970 में जब हमारी प्रधान मंत्री ने एवार्ड दिया कि पांच साल के बाद चडीगढ पंजाब को चला जाएगा ओर फाजिल्का ओर अबोहर हरियाणा को मिलेगा। तो उनका फैसला आते ही बगैर किसी पोलिटिकल कन्सिड्रेशन के सारे हरियाणा मे एक बडा रोंष खडा हो गया।

चौधरी बंसीलाल: लेकिन यह बात चौधरी शिवराम वर्मा मानेगे कि प्राईम मिनिस्टर साहिबा ने फैसला हरियाणा के हक मे दिया। हालाकि उन्होने किया लेकिन फैसला हमारे ही हक में पडता है।

चौधरी शिवराम वर्मा: सारे हरियाणा मे इतना रोष हुआ कि सैट्रंल गवर्नमैट को इस बात का पता चल गया कि हरियाणा के लोग भी आन्दोलन कर सकते है क्योकि वह तो भाषा ही आन्दोलन की समझते है।

चौधरी बंसीलाल: अब कही ऐसी गलती न कर बैठना ।

चौधरी शिव राम वर्मा: एवार्ड आने के बाद पंजाब सरकार ने एलान किया कि पंजाब के अन्दर निवासी दीवाली मनाएंगे। वह एलान तो शाम को हो चुका था लेकिन अगले दिन जब हरियाणा में.....(विघ्न)

चौधरी बंसीलाल: स्पीकर साहब, मै मैबर साहब को एक चीज कलियर कर दूं। फार हिज इन्फर्मेशन कि जब पंजाब के चीफ मिनिस्टर ने एलान किया कि हम दीवाली मनाएगे तो मैने यूनियन होम मिनिस्टर को टैलिफोन पर प्रोटैस्ट किया कि इस दीवाली से हरियाणा मे हालात ओर बिगडेगे तो फिर सैट्रंल गवर्नमैट क कहने पर उन्होनें दीवाली नही मनाई थी।

चौधरी शिव राम वर्मा: यह तो अच्छी बात है इसमें क्या बुराई है? तो मै कह रहा था कि फिर पंजाब वालों ने दोबारा एलान किया कि दीवाली नही मनाई जाएगी। सरदार गुरनाम सिंह उस वक्त पंजाब के चीफ मिनिस्टर थे।

चौधरी बंसीलाल: पंजाब में तो आन्दोलन कोई नही हुआ।

चौधरी शिवराम वर्मा: उन्होनें दीवाली नही मनाई लेकिन वे खुश थे। लेकिन थोडे ही दिन बाद पता नही किस ने उनको याद करवाया कि फाजिल्का ओर अबोहर का इलाका बहुत उपजाऊ है वह तुम्हारे हाथ से निकल गया है आप खुशी किस बात की

मनाते हो। मुझे स्पीकर साहब बाहर या घर पर कभी किसी से बात होती थी। तो कई भाईयों ने यह कहा कि हरियाणा को तो बडा फायदा हो गया है। फाजिल्का ओर अबोहर का इलाका मिल गया है। मै उनकी इस बात का साथ मे जवाब भी देता हूं कि अगर किसी आदमी की पगडी उतार के ले जाओ और उसे बनौले की बोरी दे दो ओर कहो कि बो लेना कपास बहुत हो जायेगी। अब पता नही कब बनौले जमेंगें कब कपास होगी ओर कब कपडा बनेगा। यहां कुछ दिनों के लिए हमारे मुख्यमंत्री साहब भी चुप रहे थे। क्योकि हरियाणा मे रोष था और वे चाहते थे कि जरा वातावरण ठंडा हो जाए तो अच्छा है बहुत दिन तो वह बोले नही थे। लेकिन थोडे दिन बाद उन्होनें फिर कहना शुरू किया कि अबोहर ओर फाजिल्का का इलाका हम को दिया जाए क्योकि प्रधानमंत्री साहिबा ने एवार्ड मे हमें दिया है।

उपाध्यक्षा: आप पांच मिनट ओर बोल लें क्योकि बहुत से और मैबर बोलना चाहते है।

चौधरी शिव राम वर्मा: डिप्टी स्पीकर साहब, आप बीच मे न टोकती तो शायद मै जल्दी खत्म कर देता लेकिन जब आप टोक देती है तो लाईन टुट जाती है। तो मै यह कह रहा था कि जो शाह कमीशन ने फैसला दिया था वह पीछे चला गया ओर उसके बाद दूसरा फेसला हमारी प्रधान मंत्री ने एक एवार्ड की शक्ल मे दिया जिसके बारे में मैने पहले कहा कि पंजाब ने खुशी मनाई थी जब उस वक्त पंजाब ने खुशी मनाई थी तो आज पंजाब क्यो पीछे

खिसकेन की कोशिश कर रहा है। इस बात को देखने की जरूरत है शायद उनके दिल मे ऐसी बात है कि इस बार भी हरियाणा के लोग कमजोरी दिखाएंगे। लेकिन डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं अपने मुख्यमंत्री को आश्वासन दिलाना चाहता हूं कि हरियाणा के भले के लिए जो कोई भी वे काम करेगे तो हम बिना किसी पार्टी पोलिटिकस के ख्याल से उनके साथ होगें।

चौधरी बंसी लाल : तो क्या अग तक हमने कुद किया ही नही?

चौधरी शिव राम वर्माः खरड़ तहसील खोई गई, चण्डीगढ मिला नही, दो साल हो गए है फैसल हुए को, अभी तक फाजिल्का और अबोहर भी आज तक नही मिला। डिप्टी स्पीकर साहिबा, प्रधान मंत्री के फैसले को मै बहुत अच्छा कहता अगर वे कहती कि चण्डीगढ़ पंजाब को और फाजिल्का तथा अबोहर आज ही से हरियाणा का है। लेकिन यह क्या फैसला था कि चण्डीगढ़ चला जाएगा पांच साल के बाद पंजाब को और फजिल्का और अबोहर मिलेगे हरियाणा को लकिन कब मिलेगे उस वक्त मिलेगे जब बाउंडरी कमीशन के बनने की खबर नही। कब बाऊंडरी कमीशन बनेगा, क्या फैसला देगा, जितना फाजिल्का और अबोहर का इलाका दिया गया है। उससे ज्यादा शायद और ले लें तो यह क्या फैसला हुआ? मै समझता हूं कि यह वही बात होने वाली है कि जैसे एक आदमी की पगड़ी छीन ले गए और उससे कहा कि यह बनौले का बोरा ले जा ओर बो ले तेरे बहुत कपास हो जाएगी

उससे पगड़ी बना लेना। मै सरकार को चेतावनी देना चहाता हूं कि वह बार–बार इस किस्म की ढील न दिखाए जिस तरह की पहले जब हरियाणा और पंजाब बने थें उस वक्त दिखाई थी जिससे कि हमे बंहुत नुकसान उठान पडा़ था। चण्डीगढ़ के बारै मे हमारी सरकार की उस वक्त की ढिलाई के कारण आज हम इस स्थिती मे आ गये है। अब यह तो प्रधान मंत्री महोदया की तरफ से एवार्ड आया यह जल्दी लागू करने के लिये मुख्य मंत्री जी, को मजबूती से कदम उठाना चाहिए। सारा सदन इस प्रस्ताव का पुरजोर समर्थन करता हैं और करेगा ऐसी मै आशा करता हूं। आज पंजाब के मुख्य मंत्री जी, कहते है कि यह तो एवार्ड है ही नही और यह कही कागज पर लिखा नही मिलता कि यह एवार्ड है और यह तो ऐसे ही एक फैसला सा दे दिया प्राईम मिनिस्टर ने। जेा लोग प्राईम मिनिस्टर के दिये एवार्ड के बारे मे ऐसी बाते कह सकते है तो आप खुद ही समझ ले कि यह जो आपसी बातचीत की बाते करते है इससे क्या नतीजा निकलने वाला है मै तो कहता हूं कि यह जो आपस मे बातचीत के लिए दोनों मुख्य मंत्री मिलते है इससे कुछ निकलने वाला नही है। यह तो तुस कुटने वाली बात है। इससे चावल नही निकलेगे . . . .

चौधरी बंसी लालः मै तो पहले ही कह चुका हूं।

चौधरी शिव राम शर्माः इसलिये मै अधिक न बोलता हुआ क्योकि उपाध्यक्ष महोदया ने कई बार टोका कि मै बन्द करूं, यही कहना चाहूंगा कि जो प्रधान मंत्री जी की तरफ से एवार्ड

आया हुआ है उसे जल्दी लागू कराया जाए। केन्द्रीय सरकार पर दबाव डाला जाए कि बजाए मार्च, 1973 के जैसा कि मेरे साथी ने इसमे कहा है जिस जनवरी की तारिख का यह एवार्ड घोषित हुआ था उसी जनवरी की तारिख से 1973 मे कम से कम बाऊंडरी कमीशन का एलान हो जाना चाहिए जहां तक बाकी इलाकों का सम्बन्ध है और यह जो फाजिल्का, अबोहर के इलाके है यह फौरन हरियाणा को आ जाने चाहिए। इन इलाको को देने मे कोई देरी नही होनी चाहिए क्योंकि इन इलाकों का विकास पीछे पड़ गया है और जो विकास के काम वहां होते थे वह रोक दिए गए है। अगर जल्दी न उनका लिया गया तो फिर हमे बैक्वर्ड इलाका ही हिस्सा मे आएगा और उसक पर हमे बाद मे बहुत खर्च करना पड़ेगा। इसलिए जितनी जल्दी वह इलाके हमारे पास आए उतना ही ज्यादा फायदा उस इलाके का है ओर हमारा है। जो बाऊंडरी कमीशन मे एक एक बागव के लिये प्रयत्न किया जाएगा। हमारे बहुत सारे गांव और इलाके पंजाब मे रह गए और कई लोगो की वहा से मेरे पास चिट्ठियां आई है कि आपने हमे पंजाब मे छोड़ दिया है हमे फौरन हरियाणा मे मिलाऔ हम हिन्दी भाषी हैं। मैने उनको जवाब दिया है कि आप अपनी जगह सिलसिला जारी रखो इधर से हम प्रयत्न और लालडू के इलाके तो शाह कमीशन ने भी हमारे माने है। इनके इलावा पटियाला का भी बहुत सा इलाका ऐसी मै आशा करता हूं। इन शब्दो के साथ मै अपना स्थान लेता हूं।

व्यक्तिगत स्पष्टीकरण

चौधरी मेहर चन्दः आन ए प्वायंट आफ पर्सनल ऐक्सप्लेनेशन। (व्यवधान) मै सिर्फ एक मिनट ही लूंगा। मैने बदकिस्मती से जनसंघ के मुताल्लिक एक शेर कह दिया था जो शायद आनरेबल मैम्बर साहब ने ठीक से नही समझा। मै अर्ज करता हूं कि मैने कहा था कि––

''खुन परदा है कि चिलमन से लगे बैठे है।

साफ छुपते भी नही सामने आते भी नही।।''

मै शुक्र करता हूं कि ये पर्दे से बाहर तो निकले। एक बात उन्होने औरा कही जो रिकार्ड के बिल्कूल खिलाफ है। उन्होने कहा कि मेहर चन्द को पता ही नही था कि हरियाणा मे कोई आन्दोलन शुरू हुआ है।। यह तो रिकार्ड की बात भूल गए लकिन मै इनकी याद ताजा कर दूं कि मेहर चन्द हरियाणा ऐक्शन कमेटी का सैक्रेटरी था, मेहर चन्द ने हुकम सिंह कमेटी के सामने मैमोरैन्डम भेजा, मेहर चन्द ने शाह कमीशन को मैमोरैंडम सबमिट किया, मेहर चन्द ने प्राईम मिनिस्टर साहिबा को भी मैमोरैंडम सबमिट किया आन बिहाफ आफ दी सिटिजन्स आफ चण्डीगढ। तो उन्होने गलत बयानी की है और जो रिकार्ड की बात है। उसे वे भूल गए है। ऐसी बाते करने से कोई फायदा नही।

गैर–सरकारी प्रस्ताव पर चर्चा का पुरनारम्भ

12:00 Noon

श्री जगजीत सिंह टिक्का(नारयणगढ): चौधरी हरद्वारी लाल जी की तरफ से जो प्रस्ताव सदन के सामने आया हुआ है ओरप जिस पर बहस चल रही है मै उसका समर्थन करता हूं और न सिर्फ मै बल्कि इस सदन का एक–एक मैम्बर और हरियाणा का हर एक बाशिंदा इसका समर्थन करता है और यह जो प्रस्ताव है यह निहायत वक्त पर आया है। जैसा कि इस प्रस्ताव मे लिखा है और यह बात एवार्ड मे भी है कि पांच साल के बाद चंडीगढ खाली करने की बात आ सकती है। इस लिये उससे पहले इस बारे मे फैसला हो जाना चाहिए ताकि बाद मे जो भाई है उनका यह कहने का मौका न मिले कि उनका हक ज्यादा हो गया है। पंजाब और हरियाणा बने यह सब को मालूम है कि मिन हालेात मे बने। पंजाब वाले पंजाबी सूबा चाहते थे और हरियाणा वालो ने कहा कि हमे अलहिदा स्टेट दे दो और हमारे ऐसा कहने की क्या वजूहात थी वह पहले भी काफी तफसील के साथ बताई जा चुकी है। हरियाणा के साथ ज्वायंट पंजाब मे बड़ी बेइनसाफी होती थी और वह बेइनसाफी पहले तो पर्दा मे रहती रही लेकिन जो हरियाणा कमेटी बनी थी उसकी जब रिपोर्ट आई तो सारा पर्दा फाश हो गया। उस वक्त मै भी सदन का मैम्बर था और जब हरियाणा बना तो मै भी सदन के पहले मैम्बरान मे से था। उस रिपोर्ट से पता लगा कि टोटल सर्विसिज मे पंजबा के 75 फीसदी आदमी थे और जहां तक गजेटिड अफसरान का ताल्लूक है उनक मे तो 93 फिसदी पंजाबी थे। हमारे इस इलाके को तो उनमे एक

कोलोनी बनाया हुआ था कि आओ हकूमत करो फायदा उठाओ और चले जाओं। बजट का बहुत मामूली हिस्सा हमे तरक्की के कामों और दूसरे कामों के लिये मिलता था और बाकी का सारा उधर ही लगता था। इन वजूहात की वजह से आखिर शाह कमीशन बैठा और उस ने सब को सुना। दो दो, तीन–तीन सौ के डेपुटेशन उन से मिले लेकिन कमीशन ने एक ही बात कही कि वे यह नही देखना चहाते है कि वहां के लोग क्या चाहते है उन्होने ता यह देखना है कि वहा बोली कोन सी बोली जाती है और बड़े सोच विचार के बाद उन्होने फैसला दिया। एक बात मै भी बड़े फख्र के साथ कह सकता हूं कि मै उस वक्त एम.एल.ए. था और मेरा इलाका पंजाबी और हिन्दी रिजन की बाऊंडरी पर था। मुझ पर सरकारी और गैर सरकारी तौर पर काफी जोर डाला गया कि मै कोई बात कमीशन के सामने लिख कर न दूं और कोई रिप्रेजैंटेशन न दू कि हम किधर जाना चाहते है लेकिन मैने कहा कि मै जिस इलाके से चुन कर आया हूं वहां के लोगो की जो मांग है अगर मै उसे कमीशन के सामने नही रखूंगा तो मै अपने इलाका वालो को क्या मुह दिखाऊंगा और मै ने उनकी बात को नही माना और कमीशन को बाकायदा रिप्रेजैंटेशन दी। इसके बाद हमारे इलाके वालो के साथ जा सलूक हुआ, वह आपके नोटिस मे लाना चाहता हूं। हरियाणा वालेो की दूसरी जगहो पर रिश्तेदारियां है और वे अपनी रिश्तेदारियों मे खोआ, बरफी वगैरह मिठाईया बच्चो के लिए ले जाते थे तो पंजबा की पुलिस बैरियर पर रखवा लेती थी और कहते थे कि तुम्हे ये चीजे हम ले जाने

की इजाजत नही देगे और चालान करेगे। उन लोगों नक कहा कि तुम मिठाई रख लो, हम नही ले जाएगें। यह बिल्कूल सच्ची बात है। हम हरियाणा सरकार के बड़े शुक्रगुजार है। कि इन्होने एक ऐसी सड़क बना दी है जिससे हमे आने जाने मे बड़ी सहुलियत हो गई, इस सड़क के बनने से उन के मुंह पर एक चपेड़ पड़ गया। अब हम किसी दूसरे इलाके के एरिये मे से होकर जाने के पाबन्द नही है, हम उब इनके मुहाताज नही रहे। डिप्टी स्पीकर साहिबा, जब शाह कमीशन का फैसला सामने आया तो आपने देखा होगा कि जहां पर पंजाबी भाषी लोग मैजोरिटी मे थे, उसका कोई भी इलाका हरियाणा को नही दिया गया, पंजाब को ही सरो का सारा इलाका चला गया। इस के बरअक्स जो हिन्दी भाषी इलाके थे वे सब हरियाणा को नही दियो गया, कुछ हिन्दी भाषी इलाके पंजाब मे मिला दिए गए। जैसा कि एक भाई ने बाताया कि 1956 मे, 50–60 गांवों को एक तहसील से निकाल कर दूसरी तहसील मे डाल दिया गया ताकि हकिरयाणा का उसके साथ कोई लिंक न रहे। सिर्फ एक गांव है ''खण्डूखेड़ा'' अगर यह गांवहमे दे दिया जाए तो हमारी कंटिग्यूटी बनी रहेगी। एक ही गांव नही, हमें तो पूरा कोरीडोर मिलना चाहिए, यह हमारा हक हैं, हमे एवार्ड में मिला दिया गया था क्योकि उस वक्त के जो चीफ मिनिस्टर थे वे कई तरह से काबिल थे। उन का ख्याल था कि यह एरिया कही हरियाणा मे न चला जाए, इसलिए इसकी कंटिन्यूटी तोड़ दी गई। दूसरा कारण यह भी था कि राजस्थान के इलाके जिलां गंगानगर पर हक जमाया जा सके क्योकि वहां भी कुछ पंजाबी भाई रहते

है, इस बिना पर कहते है कि गंगा नगर भी पंजाब को दिया जाए। उनका यह कहना है कि कोरीडार हरियाणा को न दी जाए, गल्त चीज है। यह तो एक बहाना है कि कौरीडार देने से हरियाणा बार्डर स्टेट बन जायेगी। क्या हरियाणा वाले लडाई मे किसी से कम है? क्या हरियाणा अपने मुल्क की रक्षा नही कर सकता? यह जो पिछले साल जंग हुई थी, इस के किस स्टेट के नौजवानो का ज्यादा एवार्ड मिल? हरियाणा के नौजवानो का सब से ज्यादा एवार्ड मिले है। इस लिए यह कहना है कि बार्डर स्टेट बन जायेगी और रक्षा नही कर सकेगी, यह गल्त बात हैं। शाह कमीशन ने जो फैसला दिया था हमे उस का पाबन्द होना चाहिए। इस रिपोर्ट को न मानना, हमारे साथ बड़ी बेइन्साफी है। इसके बाद प्राईम मिनिस्अर के एवार्ड को न मानने से भी हमारे साथ बड़ी बेइन्साफी हुई है। (इस समय सभापतियो की सूची मै से एक सदस्य चौधरी सरूप सिंह पदासीन हुए) पहले तो यह कहा कि हमे प्रधान मंत्री का फैसला मन्जूर है और बाद मे मुकर गए। अगर फैसला मंजूर नही है तो इसका यह मतलब नही है कि वह एवार्ड, जो प्रधान मंत्री ने दिया, उससे मुकर जाए और यह कहे कि वह एवार्ड नही था, डिसीजन था। मेरी इतलाह के मुताबिक सरदार गुरमुख सिंह मुसाफिर और गुरनाम सिहं ने लिख कर दिया है कि एवार्ड दे दिया जाए, आप अपना फैसला दे दिजिए, जो फैसला आप देगी वह हमे मंजूर होगा। यह लिख कर दिया हुआ हैं, आप तसदीक कर ले लेकिन आज ये मुकर रहे है कि हमने नही लिखा। इसके लिए हम भी पाबन्द है और ये भी पाबन्द है। हरियाणा ने यह

एवार्ड इसलिए माना था क्योकि यह हमारे देश के प्रधान मंत्री ने दिया था और दूसरा कारण यह था कि इस मे मानने से देश की इन्टैग्रिटी कायम रहेगी। हमने देश की इन्टेग्रिटी का कायम रखना ठीक समझा बेशक हमे नुकसान ही जाए, हम नुकसान को बरदाश्त करने के लिए तैयार थें। उस वक्त माना था और आज कहते है कि यह एवार्डनही माना था, यह हमारे साथ बेइनसाफी है। आपके पास दो एवार्ड थें– एक शाह कमीशन एवार्ड आया और दूसरा प्राईम मिनिस्टर एवार्ड आया। इन दोनो एवार्डो को आप नही मानते। यह कैसे हो सकता हैं कि किसी का न माने, एक तो मानना ही पड़ेगा। अगर आप फाजिल्का और अबोहर नही छोड़ना चाहते तो चण्डीगढ और खरड़ तहसील छोड दो। फाजिल्का और अबोहर हम छोड़ देते है। चण्डीगढ और खरड़ तुम छोड़ दो। इस तरह हमारे पास जो फाजिल्का का ऐरिया है वह हमे नही मिलेगा। कोई बात तो मानों। लालडू और डेराबसी मेरे इलाके के बिल्कूल पास लगता है और इस इलाके के लोगो का जाती तौर पर जानता हूं। मूझे मालूम है कि हमारी उस इलाके के साथ सभ्यता मिलती है। हमारा उस तरफ से रास्ता है हम वहो से गुजरते हैं। मुझे इस बात का बहुत दुख हुआ कि यह इलाका अभी तक हरियाणा मे शामिल क्यो नही हुआ। इसकी मुझे बड़ी उम्मीद थी कि कमीशन बैठाया जाएगा और इसको हरियाणा मे शामिल किया जाएगा। हम इसको हरियाणा मे शामिल करने के लिए पूरा साथ देगें। यह ठीक है कि इस इलाके के लोगो के साथ गवर्नमैंट जबरदस्ती करती हैं। इनकी पंचायतों ने जो रैजोल्यूशन पास किये

थे वे कैंसिल करवाए और उसकी जगह दूसरे रैजोल्यूशन पास करवाए गए। ठीक है सरकार के पास ताकत है, वह जबरदस्ती कर सकती हैं, लेकिन अगर लोगो से पूछा जाए तो उनकी भाषा, रहन सहन, सभ्यता सारी की सारी हरियाणा के लोगो के साथ मिलती है। जहां तक लैगवेज का ताल्लूक है, इस बात का पता लगाने के लिए 1961 की सैसिज का उठा कर देख लिया जाए। उस वक्त कितनो लड़के स्कूलों मे दाखिल थें, कितनो ने किस किस भाषा मे इम्तिहान दिया, कितनेा की जबान हिन्दी थी और कितनो की पंजाबी थी। इससे साफ जाहिर हो जाएगा कि पंजाबी जबान माईनोरिटी मे थी और कितनी जबान मैजोरिटी मै थी। अब पंजाबी कम्पलसरी कर दी गई है लेकिन उस वक्त हिन्दी जबान मैजोरिटी मे थी और यह इलाका हम से बाहर नही जा सकता था। इसी तरह नालागढ का इलाका काट दिया गया। डेराबसी कलसिंया रियासत का एक पार्ट था। जब वह रियासत टूटी तो इसको दूसरी तरफ कर दिया गया। इसका ताल्लूक छदरौली के साथ था जो कि अब भी हमारे पास है। छदरौली अम्बाला जिला मे है। अगर छदरौली इलाका हमारे पास है तो डेराबसी वाला इलाका क्यों काट दिया गया। अगर सोच समझ कर करते तो यह इलाका हमारे पास आ सकता था, आना भी चाहिए और अब भी आ सकता है। नालागढ का इलाका हिन्दी स्पीकिंग एरिया है, लेकिन हरियाणा मे नही आया। वह हमारे पास था और हमारे पास रहना चाहिए था क्योंकि बहुत पहले से यह अम्बाला जिले का एक अंग था। आज अगर पंजाब के लिए कमीशन बैठाया जाए और वह कमीशन

इन्साफ से काम करे तो उन के पास बहुत से ऐसे इलाके निकलैंगे जो पंजाब मे नही जाने चाहिए। होशियारमुर की तरफ के इलाके चले जाएंगे क्योकि यह सारे का सारा हिन्दी भाषी इलाका है, यह हमारे साथ मिलना चाहिए। चेयरमैन साहब, एक भाई ने एक बात कही थी कि जब प्राईम मिनिस्टर साहब का एवार्ड आया था पंजाब वालों ने खुशी मे दीवाली मनाने का एलान कर दिया था, यह सही बात हैं। चीफ मिनिस्टर साहब ने बताया कि अगर वाकई दीवाली मनाई जाती तो उसका उल्टा असर पड़ता है। इसके बाद तो फौरन ही अखबारों मै आ गया है कि पंजाब वाले कहते है कि हमें खुशी है। छोटी अखबारों ने भी और काफी बड़ी बड़ी अखबारों ने भी यह छापा। इलस्ट्रेटिड वीकली मे एक चीज आई जिसको पढ कर के हमारे बड़े भाई ने सोचा समझा। उसमें लिखा हुआ था कि–

मझ बेच के घोड़ी लई,

दूध पीन तो गए, लीद उठानी पई,

यह अखबारों मे आया कि दुध देने वाली मझ तो गई ओर घोड़ी की लीद उठानी पड़ी। उनके दिमाग मे बात आई कि यह बात सही है, मुकरो। इसके बाद उन्होने मुकरना शुरू कर दिया। यह कोई ठीक बात नही हे। आप उनकी जबान देखो, उनकी कमिटमैंटे देखों। मैने पहले भी कहा कि ज्ञानी गुरमुखसिंह मुसाफिर और सरदार गुरनाम सिंह ने लिख कर दिया हुआ है कि

प्रधान मंत्री जो फेसला दे वह हमे मंजुर होगा। आज वे क्यों मुकरते है? इसलिए, क्योकि उन्हे खतरा है कि अगर कमीशन बैठ गया, तो हमे नुकसान रहेगा। अब तो वे यह भी कहते हैं, अखबारों मे आया, माना नही गया, कि चण्डीगढ को बांट दों। भला उनसे पूछो क्यों बांट दो? सारे चण्डीगढ पर और खरड़ तहसील पर हमारा हक है। शाह कमीशन ने इसे हमें दिया है। अगर वे फाजिल्का अबोहर वाले प्राईम मिनिस्टर एवार्ड को नही मानते तो शाह कमीशन को मान लें। हम दोनो बातों के लिए तैयार है चाहे उसको माने या चाहे उसको मानें।

चेयरमैन साहब, आपसे एक बात और कहुंगा कि यह जो फैसला है यह ज्यादा देर तेक लटकना नही चाहिए क्योंकि इसमें एक बड़ी खतरनाक बात हैं। पांच साल के बाद यानी सन् 75 की जनवरी 28 के बाद तोर पर या मौरल तौर पर कह लें, हरियाणा को यहां रहने का हक नही होगा। अगर हम इस वक्त अपने हक के लिए जद्दो जहद नही करेंगे तो फिर यह तो चुप बैठे हैं, आज वे हमसे कहेंगे कि आप यहा से जाओ, इनको यहां से निकालों, फाजिल्का ओर अबोहर का फैसला हो जाएगा जब कमीशन बैठेगा। अगर कमीशन बैठना है तो वह कमीशन अब बैठ जाए और वह अपना फैसला 1973 के खात्मे से पहले पहले दे दे ताकि हमारे पास एक साल रह जाए उसको इंप्लीमैंट करे के लिए। अगर बातचती से दोनों मुख्य मंत्री फैसला करते है और हरियाणा तथा पंजाब की सरकारें उसक पर सहमत हो जोती है तो वह

फैसला पहले हो जाए। यह न हो कि खामोशी और चलती रहे और उसके बाद यह कह दिया जाए कि आप यहां बैठ भी नही सकतें। यह ध्यान अभी होना चाहिए।

चेयरमैन साहब, मुझे इस बात मे बिल्कूल शक नही है कि प्रधान मंत्री ने डर के फेसला दिया। ठीक है कि जो कंसिड्रेशन्ज उनके दिमाग मे आई उनके मुताबिक जो फैसला उन्होने मुनासिब समझा वह किया ताकि हमारी नेशनल इंटेग्रिटी कायम रहे। हरियाणा इस बात को अब भी मानता है और उम्मीद है कि प्रधानमंत्री बगैर हमारी रजामंदी के अपना फैसला बदलनक वाली नही है और न बदलेगी। हमें उनकी लीडरशीप मे और उनके फैसले पर पूरा यकीन है। अगर पंजाब वाले इसे नही मानते तो वे शाह कमीशन की रिपोर्ट को मान ले। बहरहाल उन्हे एक फैसला तो मानना ही पड़ेगा। यह तो नही हो सकता कि जो वे कहे वही मानना पड़ेगा। फिर वह फैसला क्या हुआ राजीनामा क्या हुआ? दोनेा फरीकेन यदि बैठे, आपस मे बातचीत करे और जो निणर्य हो उस पर दोनो फूल चढाये तब तो वह फैसला हुआ, राजीनामा हुआ। एक फरीक यदि यह चाहे कि उसकी बात मान ली जाए तो उसके लिए तो कमशन पहले बैठ चुका है। हम कमीशन से फिर भी नही डरते क्योंकि उसमे अबोहर और फाजिल्का हरियाणा का आएगा। वह तो पहले फैसला हो चुका है कि अबोहर और फाजिल्का हरियाणा का हैं। यदि वे यह नही मानते तो फिर चण्डीगढ़, खरड़, तहसील और दूसरे इलाके जो शाह कमीशन ने

हमे दिए है वे हरियाणा को मिलने चाहिए। मै ये बाते कह करके इस रैजाल्यूशन का समर्थन करता हूं और पुरजोर मांग करता हूं कि ये जो चीजे हैं इनका फैसला 1973 के खात्मे से पहले पहले हो जाना चाहिए ताकि बाद मे इसके झगड़े न पड़े।

चौधरी फूल चन्द (रोहट अनुसूचित जाति): मोहतरिमा चेयरमैन साहब, यह जो फाजिल्का अबोहर और चण्डीगढ आदि की ट्रांसफर का सवाल है इसमे एक बात इतनी ऊंची उभर आई है हमारे सामने और जो झगड़े थे वे इतनी शिद्दत अख्तियार करने लग रहें है कि खतरात बढने जा रहे हैं। मेहरचन्द जी अपने समर्थन की पैरवी करते हुए दो शेर पढे उन्ही को देख करप मुझे भी एक शेर याद आया है कि–

दास्ताने शवेग़म किराये तुल्लानी

मुच्तसिर यह कि तूने मेझे बरबाद यिकया। इस बात का न जाने कहां ऐंड होगा। पंजाब वालों के पास एक संत है, उसको वे बैठा देते हैं। उसके पास एक तेल का ड्रम रख देते है और ऐलान कर देते है कि अगर यह फैसला सैन्ट्रल गवर्नमैंट नही करेगी तो वे वह ड्रम उसके ऊपर डाल कर आग लगा देंगे। . . . . (हंसी) . . . . चेयरमैन साहब, यह मुकाबला तो हम भी कर सकते है। हमारे पास भी एक संत है। . .. .(हंसी) . .. .

चौधरी हरद्वारी लालः मै नही बैठूंगा। . .. .(हंसी) . .. .

चौधरी फूल चन्दः हम भी, ड्रम न सही कन्सतर की तेल का इनके पास रख दे और किसी दिन माचिस लगा करके इस बात के लिए आग के सुपूर्द इनका करदें।. .. . . (व्यवधान) . .. . इस त रह से यह इल्जाम जो दरोगे दरवेश का इन पर आ गया है यह भी आग की नजर हो जाएगा और ये फाजिल्का अबोहर के इलाके हमे मिलेंगे क्योंकि इस बात के लिए इनकी आहूति हो जाएगी।. .. . . (हंसी) . .. .

चेयरमैन साहब, मेरा कहने का मतलब यह है कि तमाम बाते, बजाय समाधान होने के, बहुत टेन्सिटि, शिद्द और झगड़े की इन्तहा तक पहुंचते हुए मालूम होने लग रही है सब लोगो को और इस बात की हम तमाम हरियाणा के आदमियों, हमारे लीडरान, गवर्नमैंट चलाने वाले भाईयो और जनता के हर फरदो बशर को बहुत परेशानी है और इस बात को हम अपने दिल पर लिए हुए है। मै उन बातेां को ज्यादा नही दोहराउंगा। शाह कमीशन, खरड़ तहसील, हिन्दी भाषी यह कह कह करके इतनी छपाई इन पर हो चुकी है कि हमें ये चीजे जबानी हिफ्ज हो गई है, याद आ गई है। लेकिन उससे भी आगे मामला बढ रहा है जिससे बड़ा काम खराब हो रहा है। बहुत सी चीजें चेयरमैन साहब, अ ापके नोटिस मे आई। उन्ही दिनो अखबारों मे आग की

तरह तुफान उठा। हमारे एक लीडर चौधरी रीजक राम ने पर्लियामैंट से अपना त्याग पत्र दे दिया। उनके दिल मे सिर्फ एक बात थी कि बेइन्साफी को बरदास्त नही करेगें और जो स्पाट न्यूज थी अखबारों के दफतरो के दवाजो के आग वहा यह बात छपी कि चौधरी रिजक राम एम.पी. रिजाइन्ज। तमाम हिन्दुस्तान इस बात पर स्केयरड हो गया था लेकिन बदकिस्मती से रिजाईन करने के बाद चौधरी बंसी लाल और चौधरी रिजक राम साहब, जो बड़े अनन्य मित्र थे, इस बात पर बेइंसाफी पर उनकी गलतफहमी इ नती बढी कि वे आपस मे खूब लड़े ओर एक दूसरे के मुखलिफ हो गए। (व्यवधान) हम लोगों ने देखा कि यहां के स्अुडैंन्टस भी, पढनें वाले भी, आम जनता भी इतनी कसीर तादाद मे दिल्ली गई और प्राईम मिनिस्टर के दरवाजें को दस्तक दी ओर अपना प्रार्थना–पत्र पेश किया जिसकी कोई मिसाल नही। अखबारात की उनक दिनों की राय थी कि शायद इतना बड़ा जरार लश्कर तो कभी यहा इक्ट्ठा ही नही हुआ मगर उन तमाम बातेा को देखते हए आज फिर वे बाते आने लग रही है। उसी वक्त एक एवार्ड दिया गया था और पंजाब मे जो गवर्नमैंट थी उस गवर्नमैंट ने एवार्ड मान लिया था लेकिन आज वही एवार्ड इतने मजाक का मौजू बन गया है कि उस पर वे तमस्खर करने लग रहे है। मै ज्यादा तफसील मे न जाते हुए ज्ञानी जैल सिंह जी से यही अर्ज करूंगा कि पता नही वे उन दिनो कहां छूपे रहे। अब ऊपर उभर कर लीडर बन गए है, चीफ मिनिस्टर बन गए है। आज उन्होने उस एवार्ड को ढोंग करार दिया है। तमस्खर और मजाक आंका

है। यह उन्होने खिताब दिया है उस एवार्ड को। वे कहते है कि यह तो एवार्ड था ही नही बल्कि यह तो प्राईम मिनिस्टर साहिबा की एक राय थी। चेयरमैन साहब, मजाक तो यह भी है कि जिस प्राईम मिनिस्टर को हमारे देश के लोग ही नही बल्कि सारी दुनिया के लोग यह कहते कहते नही थकते कि ये दुनिया की अजीब शखसियत हैं उनके फैसले को मानने से इन्कार कर रहे है। मे मजाक ही नही करते है बल्कि उनकी बेइज्जती भी करते हे। एक तरफ तो वे ये कहते है और यकीन दिलाते है कि अगर मुझे प्राईम मिनिस्टर साहिबा कुछ कहे वही मै करने को तैयार हूं ओर दूसरी तरफ जब एवार्ड का जिक्र आता है तो यह कहने लग गए कि यह तो प्रधान मंत्री जी राय थी। चेयरमैन साहब, मजाक तो मजाक तक ही रहा लेकिन उनकी इन्तहा देखिए कि एक सैन्ट्रल कैबिनैट के मश्वरे से प्राईम मिनिस्टर के फैसले को उन्होने ऐसे ही लाईट–वे और मजाक के ढंग मे ले लिया। मै आपकी मार्फत यह भी गुजारिश कर दूं और मेरा रूका भी सैन्टर मे भेजा जाए कि इस फैसले की तसदीक सैन्ट्रल कैबिनैट ने की थी या वैसे ही यह एवार्ड दे दिया था। क्या यह मजाक ता नही था? आज पंजाब के लीडर इस बात पर आ गए है तो हमें भी उसी बात पर आ जाना चाहिए। चेयरमैन साहब, जिस तरह से पहले हरियाणा मे गोलिया चलाई गई, लोगो के सीने भून दिए गए, वही बाते फिर ताजा होगी और न जाने क्या–क्या होगा, इन बातो की तरफ हमारी सरकार को पूरा ध्यान देना चाहिए। मुझे अफसोस इस बात पर भी है कि सैन्टर मे एक पंजाब के वजीर है उनका वहां बड़ा

भारी इनफलूएन्स है, वहा रिडायर्ड राजे और महाराजे भी बैठे है उनकी भी काफी से हैं। वे सैन्ट्रल गवर्नमैंट के लीडरान को, अफसरान को इस बात के लिए 24 घंटे तैयार करते रहते है कि हरियाणा का किसी जगह केाई हक नही है। जब शाह कमीशन ने खरड़ तहसील, डेराबसी, लालडू और दूसरे गांव हमे दिए तो वहा एक लश्कर पहुंच गया। जो बम्बई था उसको भी बुला लिया, जो कही गवर्नर था उसकरे भी बुला लिया। उन्होने वहां बैठ कर उसको री–ओपन करवाया उसकी री–ओपन करवाने से जो इलाका हमारे हाथ लगा था वह हमारे से फिर निकल गया। मजाक की कोई इन्तहा हो सकती है लेकिन यह तो इन्तहा को भी पार कर गए। अगर इस एवार्ड मे कोई खामी थी तो सैन्ट्रल गवर्नमैंट की थी हमारी नही। उसने फैसला दिया था। उन्होने पहले फैसले को भी नही माना औरप अब फिर सैन्टर का मजाब कर रहे है और हम सब लोगो के लिए भी मजाक का मौजू बना दिया हैं।

ज्ञानी जैल सिंह जी एक और भी बात कहते है कि अगर यह इलाका हमारा हरियाणा को दे दिया गया तो हमारी कंटिग्यूटि राजस्थान से टूट जाएगी। राजस्थान मे पिछली गवर्नमैंट मे एक भाई वहां डिप्टी मिनिस्अर बन गए थें। उनकी वहां पर लौबी शुरू हो गई कि साहब यह जो हनुमानगढ और गंगानगर का एरिया है यह भी पंजाब का है क्योंकि यहां पर पंजाबी बसते है। सन्त जी भी मरणव्रत करके बैठ जाऐगे कि हमारा इलाका है। हमे मिलवना चाहिए। यह बात बहुत ज्यादा

फेलने लग गई है, यह एब बड़ी भयानक डिजाइन है, और उन्होने इसका एक ब्लूप्रिंट तैयार कर लिया हैं कि जहां देखो वही राइट बना कर बैठ जाउो कि यह तो साहब हमारा राइट है। चेयरमैन साहब, कंटिग्यूटि को तोड़ कर, यह फाजिल्का और अबोहर का लेना चाहते थे लेकिन अब बार बार ये बाते आ चुकी हैं। उसी कंटिग्यूटि को तोड़ने के लिए फिर खडे हो गए कि नही साहब, यह हमारी कंटिग्यूटि है, हम उधर जाएंगे। वे तो यह चाहते है कि अगर फाजिल्का और अबोहर हरियाणा का दे दिया गया तो हमारी राजस्थान के साथ कंटिग्यूटि नही रहेगी। चेयरमैन साहब, मुझे इस बात ताक काफी अरमान है ओर जिसको मैने महसूस भी किया जो कि दो दिन पहले कहा गया कि बार्डर बन जाएगा अगर हरियाणा मे चला जाएगा। यह तो बार्डर अब भी हैं। क्या ज्ञानी जैल सिंह जी ने इस बात का मजाक करने के लिए भी हिम्मत कर ली कि अगर लड़ाई का मौका आया तो हरियाणा पीछे रह जाएगा? पहले वक्त की तारिख बार–बार उठ कर इस बात को कहती है कि हिन्दूस्तान के सिपाही सबसे बहादूर है। आज भी अग्रेंजो की जबान पर हिन्दूस्तान के सिपाहियों के नाम जर्मन की लड़ाईग मे, जिसने जर्मन के दांत खट्टे किए थे वे हरियाणा के सिपाहियों ने ही किए थे, उनकी ही जरूरत पड़ी थी। स्तान से भी डर जायेगें। क्या ज्ञानी जैल सिंह जी इन सब बातेा का भूल गए और मजाक मे ले गए? क्या ज्ञानी जैल सिंह जी इस बात को भूल गए औरप जेब मे डाल लिया कि जितनें गैलेन्ट्री एवार्ड मिले है, वे सबसे ज्यादा हरियाणा के लोगो को मिले है। (तालियां) जब मेजर

होशियार सिंह का औनर देने के लिए चीफ मिनिस्टर साहब गए थे उस वकत कितनी जनता वहा उमड़ कर आई थी और उनकी आखों मे श्रद्वा के आंसू आ गए थें। कया उसक वक्त उन्होने हरियाणा की तरफ देखा था? आज ऐसे शूरवीर लड़ने वाले, जानबाज गैरयूर और नौजवानो का मौका मिला तो वे पीछे हट जाएगें, यह कैसे हो सकता है? अगर पाकिस्तान की फौज के साथ अकेले हरियाणा की फौज को लड़ना पड़े तो हरियाणा के नौजवानो की फौज उनके लिए काफी है। जिन मोर्चो पर और मुश्किलात मे हरियाणा के नौजवान लड़ते है उनकी कोई भी ऐरिया के लोग बराबरी नही कर सकते। वे मौत के साये मे रहते है। उनके बारे मे ये कहते कि बार्डर स्टेट बन जाएगी। उनकी यह कहने की हिम्मत कैसे हो गई? चेयरमैन साहब, यही बात नही अभी पांच–सात दिन पहले मैने अखबारों मे पढा कि फाजिल्का और अबोहरप के इलाके के लिए पंजाब वाले क्रेश प्रोग्राम चालू कर रहे है। यह सब इस लिए कर रहे है कि ज्यादा से ज्यादा अड़चने पैदा की जाए। कल को वे अपने केस को अपने मामले को ऐसे ढंग से सैन्टर की मेज पर रख सके कि साहब हमने बहुत ज्यादा इनव–वैसटमैंट कर दी। हमने तो दस दिन मे दो करोडत्र रूपया लगा दिया। ये जो भी चीजे की जा रही है, वे किसी चीज को सामने रखकर की जा रही है। चेयरमैन साहब, लाईट ढंग से तो कुछ भी कहें लेकिन यह बात मंजिरे बात पर आ रही है, आना चाहती है और पंजाब एक बार फिर इसे आग लाना चाहता है। क्या पंजाब और हरियाणा मे कोई फरक होगा? हरियाणा और

पंजाब के नौजवानो की रगों मे उमड़ते हुअ जजबात, उमड़ता हुआ खुन, और उभरती हुई जवानी, एक जैसी है। हमारा और उनका झगड़ा नही होना चाहिए। शर्म की बात है कि जब गैर–कांग्रेस की हकूमत थी, वह तो घूटने टेक गई थी, और मान गई थी उन्होने दीवाली का भी एलान कर दिया था और जब से ज्ञानी जैल सिंह जी, चीफ मिनिस्टर बने हैं, वे इन्कार कर रहे है कि हम फाजिल्का अबोहर नही देगें। मजाक तो यह भी है कि तमाम प्रैस की रिपोर्ट, तमाम अखबारों के ऐडिटारियल इस बात के लिए सबूत है कि हरियाणा का केस बहुत सही है वाक्याती ढंग से कानूनी तरीके से और हालात के तरीके से, लेकिन पंजाब वाले मान ही नही रहे हैं। जिद् पर जिद् लगाए हुए है कि हम तो इस बात को करके छोड़ेगे। जब ऐसी बाते सामने आ रही है तो हम समझते हैप कि सारी बातें मजाक म चली गयी है, जोकिंग मे चली गई है।

चेयरमैन साहब, मै बहुत संजीदगी से इलतमास करूंगा कि जो–जो कमियां हमारी हकूमत ने दिखाई है उन तमाम को दूर करना पड़ेगा। सेन्टर से हमारी लाठी ज्यादा मजबूत नजर नही आती। मै आप से बिल्कूल अदब से कहना चाहता हूं कि वहां पर जो हमारे महारथी बैठे है वे कुछ गुंगे है पर इस सदन की तरफ से हरियाणा के लोगो की तरफ से पुरजोर हिसायत करके इस बात को लिख कर भेजा जाए कि इस इलाके पर हमारा हक है। हकूमन यह भी लिख कर भेजे कि प्राईम मिनिस्टर एवार्ड यहां फेल हो गया और जो आश्वासन दिया गया था उससे मुकर रहे

है, फरामोश हो रहे है, उसे रद्दी की टोकरी मे फेंक दिया हैं। इसके नतायज बड़े भयानक होगे। चेयरमैन साहब, मे ता यह समझता हूं कि आप मुझे यह कहेगे कि मै थोड़ा आईम लूं। चेयरमैन साहब, मै फिर से अर्ज करूंगा कि पहले तो किसी चीज को देखने के लिए तहसील यूनिट थें लेकिन अब यूनिट गांव हो गए है। चण्डीगढ के खसारे को वह पूरा कर सकते है? अगर हमारी वफादारी का, लायल्अी का यही सिला मिला कि हम लोगो का समझा ले और एक नई बात बर्दाश्त कर लें, तो मै यह साफ कर देना चाहता हूं कि हम इसको बिल्कूल भी बर्दाश्त नही करेगे। हमने इस बात के लिए हर आदमी को तैयार कर लिया है, हरियाणा का हर आदमी इस बात के लिए तैयार है और हम इस एवार्ड का अपनी प्रैस्टीज का सवाल समझते है कि अगर इस एवार्ड को भी इसी तरह से फेंक दिया गया और भूला दिया गया तो इसमे केवल हमारी ही नही सैन्टर की भी बेज्जती है। पंजाब के हर लीडर की इस एवार्ड पर तकरीर आ चुकी है। चेयरमैन साहब, मै आप के द्वारा यह प्रार्थना करूंगा कि हम सब मैम्बरान और हम मैम्बरान के पीछे जितनी भी हरियाणा की जनता है, सब इस प्रस्ताव की पुरजोर हिमायत करे। मै भी इसकी हिमायत करने के लिए ही खड़ा हुआ हूं। मे आप के द्वारा यह भी दरख्वास्त करता हूं कि आप सैन्ट्रल गवर्नमैंट से यह कहे कि इस मामले को लटकाने में, जो भी वक्त गुजरने लग रहस है, उससे हमारे सब्र का पैमाना भी कर छलकने लग गया हे। इब इसे और लटकाने के नतायज बहुत खराब होंगे। मै एक बात और अर्ज करूं। आप तो

जानते ही है और तजुर्बेकार है कि हमारा मुल्क अब कोई क्राइसिज बर्दाश्त करने के लिए तैयार नही है। महंगाई और ऐसी ही दूसरी बातों को लेकर जब अन्दोलन चलता है तो तमाम चीजे बीच मे आ जाती है और ऐसी चीजों को भड़का कर, कम्यूनल बनाकर और दूसरा टच्च देकर, एक ऐसा सीन क्रिएट हो जाता है जो मुश्किल से कंट्रोल होता है। क्या सैन्टर की हकूमत यह चाहती है, क्या प्राईम मिनिस्टर यह चाहत ी है कि फिर रिप्रैशन हो, लोगो को दबाया जाए, मजलूम बना कर उन पर फिर जुल्म ढाए जाए, एक बार उनका फिर विक्टेमाईज किया जाए और फिर पहले किी तरह से गोलियों से भून दिया जाए? मे यह नही समझता हि उनके दिमाग मे कोई ऐसी चीज है। आज तक हमारी प्राईम मिनिस्टर ने जितने डिसीजन लिए है। इस हिसाब से यह एवार्ड ता उनके लिए कोई मायने नही रखता। शायद इस बात की इम्पलीमैंटेशन मे, उनकी भी थोडी़ बहुत हिमायत हों। मै यह समझता हूं कि सनत साहब ने जो प्रस्ताव हाउस मे पेश किया है। हम सब उसका समर्थन करे। हमारे सन्त जी तो अंग्रेजी सन्त ज्यादा है। उनको चाहिए कि सन्त फतेह सिंह के मुकाबले मे सड़क पर खुदकशी ही क्यों न करनी पड़े। मे यह चाहता हूं कि जो प्रस्ताव इन्होने हाउस मे पेंश किया है, उसमे हम सब आदमी दिल और जान से तथा हिम्मत और यकीन से शामिल हों। मै सरकार से यह प्रार्थना करता हूं कि यह जो बाऊंडरी कमीशन बैठना हैं, इसे जल्द से जल्द बैठा कर इस एवार्ड पर अमल कराए ताकि जनता का रूझान भड़कनें की बजाए ऐसे मसलात मे लगे

जिनसे उन्हे कुद राहत मिल सके। इन अल्फाज के साथ मै आपका शुक्रिया अदा करूंगा जो आपने मुझे बोलने का मौका दिया। मै आप से एक बार फिर इल्त जा करूंगा कि इस प्रस्ताव का पास करा कर सेन्ट्रल गवर्नमैंट को भेज कर उसके एवार्ड की इम्पलीमैंटेशन कराए। जय हिन्द! (व्यवधान)

श्री अमर सिंह (बवानी खेड़ा–अनुसूचित जाति): चेयरमैन साहब, 17 अगस्त, 1972 को यह प्रस्ताव इस हाउस मे पेश हुआ था और दूसरे दिन इस प्रस्ताव पर बहस चल रही है। यहां पर संत जी का जिक्र आया । हमारे सनत जी किसी से भी कम नही है। मै समझता हूं कि हमारे सन्त जी एक बात मे पंजाब से सन्त से बहुत आगे है। उनके सन्त अनपढ है जबकि हमारे सन्त, काबिल, बेहतरीन और बहुत पढे लिखे है। इस लिए मै अपने सन्त जी को उनसे सुपीरीयर समझता हूं। चेयरमैन साहब, जो प्रस्ताव जेरे–बहस है, वह कोई मामूली प्रस्ताव नही हैं। बड़ा अहम प्रस्ताव है। हरियाणा की मान–मर्यादा और शान का सवाल है। हमारी जो एक हाईएस्ट बौडी है, सुप्रीम कोर्ट, उसके एक जज का फैसला था, शाह कमीशन का फैसला था, लेकिन सरकार ने उस फैसले को नही माना। जम्हूरियत के अन्दर ऐसे मसले हल करने के दो–तीन वैपन्ज होते हैं। आम तौर पर जो तरीका जम्हूरियत मे चलता है वह यह है कि जो लीडर आफ दी रूलिंग पार्टी होता है या प्राईम मिनिस्टर होता है, वह ऐसे मसले हल करता है। जैसे मैने पहले कहा है, पहले तो शाह कमीशन के एवार्ड को ठुकराया

और अब प्राईम मिनिस्टर के एवार्ड को भी जो 29 जनवरी, 1970 को अनाउन्स हुआ था, खत्क करने की कोशिश की जा रही है। इस विषय मे जो अहम प्रस्ताव सदन के सामने है, वह आज जेरे बहस है।

इतिहास का एक विधार्थी होने के नाते, मैने एक दो बाते खास तौर पर देखी हैं। हरियाणा की तारीख इस बात को शहादत देती है कि हरियाणा का बहादूर, वीर, आज से ही नही, मौजूदा तीन लड़ाईयों से ही नही बल्कि महाभारत की लड़ाई के समय से और उससे भी पहले से हरियाणा की मान–मर्यादा और शान के लिए लड़ता रहा है। तारीख मे भी इस बात का जिक्र आता है और हरियाणा की हरि भूमि, महाभारत के कुरूक्षेत्र की रणभूमि और इसी तरह की दूसरी सारी चीजें इस बात की शहादत है। पानीपत के मैदान और तारावड़ी के मैदान इस बात ही शहादत है कि मुगल पीरियड के अन्दर दिल्ली को जीतने के लिए जो मुसलमान हमलावर आए, उन्हे हरियाणा के बहादूरों ने हरियाणा के रास्ते मे रोका। तारिख इस बात का सबूत है मै यह समझता हूं कि आज हमारी मान–मर्यादा ही नही, बल्कि इन्साफ भी इस बात को पुकारता है कि फाजिलका और अबोहर तहसील के जो इलाके सन् 1884 तक फाजिल्का और अबोहर के 415 गांव, जब हमारा जिला हिसार नही बल्कि सिरसा था, सिरसा जिले की तहसील का हिस्सा थें। तारीख इस बात का सबूत है है कि 1857 मे हरियाणा से अग्रेजो के खिलाफ बगावत हुई, अग्रेंजों से यहां पर मुकाबला

किया गया। इस बात के भी सबूत मिलते है कि हरियाणा के बहादूरों ने अग्रेजा से गाट्टे गहाए, मेमों से गाट्टे गहाए आप भी जानते है कि हांसी तहसील मे ऐसी हुआ और इस बहादूरी का इनाम उन्हे सवा लाख रूपया मिला है। उन बहादूरों ने मेमों से, अग्रेजा से गाट्टे गहाए थें। उस वक्त की बहादूरी की बात थी इसलिए यह एक खुशी की बात है। 1857 के गदर का हरियाणा को यह इनाम मिला कि मेरठ का इलाका यू.पी. मे शामिल कर दिया गया। मेरठ से दरियाए सतलूज तक का सारा, हमारा इलाका था। पुराने समय मे मेरठ से लेकर दरियाए सतलूज के बीच का टुकड़ा हरियाणा के नाम से पुकारा जाता था। जब 1857 मे हमारे वीरों ने बहादूरी दिखाई और अग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी तो उन्होने हमारे तीन चार हिस्से बना दिए। आज जो भाई यह कहते है कि फाजिल्का और अबोहर मिलने से हम बार्डर स्टेटस मे मिल जाएंगें, वे उस समय अंग्रेजां से ईना लेने वालो मे से थे। महाराजा पटियाला और दूसरे ऐसे लोगो ने अंग्रेजो की गुलामी करके छोटे–छोटे टुकड़े लिए और बहादूर उस वक्त सीना तान कर अंग्रेजा के खिलाफ करता रहा । आज ये कहते है कि हरियाणा बार्डर स्टेट हो जाएगी और बार्डर स्टेट बनने के बाद पता नही पंजाब का बहादूर लड़ सकेगा या नही और हरियाणा स्टेट जो बार्डर पर होगी वह सुरक्षा कर सकेगी या नही। जब हम बहादूरी मे देखते है तो हरियाणा हिन्दूस्तान मे अव्वल और जब कोई रियत देने की बात आती है और आज भी हम इस बात के शिकार स्टैप मदरली ट्रीटमैंट दिया जाता रहा है ओर आज भी हम

इस बात के शिकार है। सैन्टर मे हरियाणा के डेढ पोने दो मिनिस्अर है और वे भी गूंगे पहलवान और दूसरी तरफ पंजाब के काफी इन्फ्लूएन्शल मिनिस्टरर्ज है, पंजाब की वहा पर लौबी है, काफी इन्फ्लूएन्शल है। लेकिन इस का मतलब यह तो नही कि हम उस लौबी के शिकार बने और हरियाणा के मान मर्यादा का ख्याल न रखा जाए। शाह कमीशन के फैसले का न माना जाए और फिर प्रधान मंत्री के एवार्ड को भी मानने के लिए तैयार न हों। आज जो यह प्रस्ताव हाउस के सामने आया है यह बहुत बड़ी बात है। चेयरमैन साहब, 1956 मे स्टेट्स री–आग्रेनाइजेशन कमीशन पाणिकर की अध्यक्षता मे बैठा। उनकी रिपोर्ट से यह साफ जाहिर है कि यू.पी. को बाईफुरकेअ कर दिया जाए और हरियाणा अलहिदा बना दिया जाए। लेकिन बजाए इस बात को मानने के, चेयरमैन साहब, बापको पता होगा कि बाबा खड़क सिंह गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी के प्रधान थे उन्होने खड़ग लेकर, तलवार दिखाकर नेहरू जी को डराया, हमारी कांटीन्युइटी को तोड़ दिया। हमारे 96 गांव जो फाजिल्का के थे जो हमारी हद मे मिलते थे और 415 गांव जो सिरसा जिले के थें उनका हिन्दी रिजन और पंजाबी रिजन की चर्चा चलाकर फिरोजपुर जिले का हिस्सा बना लियां उस समय हकूमत उनके हाथ मे थी, उनके हाथ मे ताकत थी। उनके दिमाग मे यह बात थी कि अगर कभी अलहिदा होने की बात चले तो कही यह सारे इलाके हरियाणा मे न चले जाए। इस बात का उन्हे डर था इसलिए उन्होने 415 गांव फिरोजपुर मे मिला दिए। उस वक्त हकारे साथ ज्यादती हुई। पहले बाबा खड़क सिंह ने

हमारे प्रधान मंत्री को इन्फ्लूएन्शल करके और नंगी तलवारो का जलूस निकाल कर 415 गांव मिला लिए थे फिर मास्टर फतेह सिंह के मुकाबले के लिए हमारे पास भी संत है और हमारा संत काफी मजबूत है, पढा–लिखा भी है। हम उनकी हर बात मानने के लिए तैयार है। अब यह नही हो सकता कि आन्दोलन करके, तलवारों का जलूस निकालकर या पंजाब की जो सैन्टर मे लौबी है उसके द्वारा प्रधान मंत्री पर असल डाल दें। हरियाणा की सारी जनता हर कुर्बानी के लिए तैयार है। अभी सरदार जगजीत सिंह जो गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी के सैक्रेटरी है उन्होने लन्दन मे कहा है कि सिख बहादूर कौम हैं, उनकी पंजाब से बाहर स्टेट बना देनी चाहिए। हमारी तो हिन्दूस्तान के अन्दर खुद–मुख्तियार स्टेट बननी चाहिए। हिन्दूस्तान के खिलाफ ही जहर उगला है। यह सारी बाते सैन्ट्रल गवर्नमैंट के सामने है और प्रधान मंत्री इन सब बातों को अच्छी तरह से जानती है। (इस समय अध्यक्ष महोदय पदासरन हुए)। स्पीकर साहब, मै यह बता देना चाहता हूं कि हरियाणा के लोग तहजीब वाले है, नरम बरताव वाले है लेकिन हम अपनी शान और आन पर कोई आंच नही आने देगे। हम सर कटा सकते है लेकिन सर झुका नही सकते । हम आन्दोलन मे भी किसी से पीछे नही है। नवम्बर 1969 मे हमारे दस–बारह लाख नौजवानो ने दिल्ली के अन्दर प्रदर्शन किया। उस जलूस के बारे मे कहा जाता है कि दिल्ली की गलियों मे इतना बड़ा जलूस, इतना बड़ा प्रदर्शन कभी नही हुआ और इसी के परिणामस्वरूप 29 जनवरी 1970 को प्रधान मंत्री का एवार्ड डिक्लेयर हुआ। एवार्ड डिक्लेयर होने के बाद उस

वक्त की पंजाब सरकार और हरियाणा की सरकार ने इस बात को माना, बेशक हरियाणा मे बहुत सारी घटनाए घअी, बहुत सारे नौजवानों ने अपनी जाने दी क्योकि लोगो का चण्डीगढ से प्यार था। जिन लोगों ने उस वक्त दिवाली मनाने की बात की आज क्या उनकी दिवाली मोहर्रम या किसी और शोक की चीज मे तबदील हो गई हू? आज ये कहते है कि हमने उस वक्त यह नही माना था कि चण्डीगढ को लेकर फाजिल्का और अबोहर को देना चाहते है। जब प्रधान मंत्री का एवार्ड अनाउंस हुआ तो उस वक्त के पंजाब चीफ मिनिस्टर ने कहा था कि यह एक ठीक फैसला है और उस फैसले का मानना पड़ेगा और आज वे कहते है कि वह जबानी बात थी हम इस बात को मानने के लिए तैयार नही। स्पीकर साहब, हम इस बात को कभी भी बर्दाश्त नही कर सकते कि जो शाह कमीश्न ने फैसला यिा उसको भी न माने और जो प्रधान मंत्री ने एवार्ड दिया उसको भी माना जाए। मै हाउस से यह अपील करना चाहता हूं कि इस मामलक मे हम सब एक हों। हम नही चाहते कि देश के अन्दर कोई ऐसी इन्टरनल प्रोबलैम खड़ी हो लेकिन कई भाई जान बुझकर ऐसी बात खड़ी करने की कोशिश करते है। लेकिन हम इतने बुजदिल नही है कि हम किसी के डरावे मे आ जाएं। हमारा पंजाब के भाईयो के साथ कोई झगड़ा नही हैं। पंजाब और हरियाणा दो भाई है और अलग अलग राज्य करते है। हम तो सिर्फ अपने हक के लिए लड़ रहे है।। 1947 से लेकर नवम्बर 1966 तक इक्टठे रहे है लेकिन आज हक के लिए हम लड़ रहे है। हमारे साथ असैट्स और लाचबिलिटीज

के मामले मे धोखा किया गया, हमे लाईब्रेरी नही मिली। बहुत सारी ऐसी चीजे है जिनको देने के लिए तैयार नही है। कई ऐसी चीजे है जिनकी इंफरमैशन देने के लिए नही है । जब हरियाणा और पंजाब अलग हुए तो उस वकत की जो सरकार थी वह लाइबिलिटीज और असैट्स मे हरियाणा का पूरा हक नही ले सकी। आज कहा जाता है कि हरियाणा के लोगो को न चण्डीगढ की जरूरत है और न खरड़ तहसील की। जब शाह कमीशन ने चण्डीगढ हरियाणा को दिया तो पंजाब वाले कहने लगे कि चण्डीगढ को पंजाब ने बनाया है। मै कहता हूं कि अगर चण्डीगढ की सारी सडके हरियाणा के सात जिलों मे बिछा दी जाए तो फिर भी चण्डीगढ की सड़के बाकी बच जाएगी। हरियाणा मे इनती बेहतरीन सड़के नही है। इन सड़को मे हमारे खून पसीने का पैसा लगा हे। पंजाब के भाई यह न समझे कि चण्डीगढप का पंजाब वाला ने ही बनाया है। हरियाणा से जो रैवेन्यू वसूल होता था उसका भी पैसा लगा है, हरियाणा के लोगो के टैक्स का पैसा इसमे लगा है। इसको बनाने मे हरियाणा के लोगो ने मेहनत की है। इसमे हरियाणा का नुमाया हिस्सा है। मै तो कहता हूं कि दोनो चीफ मिनिस्टरर्ज बैठ कर खुले दिल से बात करे और हमारे साथ जो ज्यादती हुई है उसके लए पश्चाताप करें और जो चीजे रह गई है उनका बंटवारा करे और आगे भी खुले दिल से बात करे। मै तो कहता हूं कि पहली बातो को तो री–ओपन करने का सवाल नही है क्योंकि जो लेटेस्ट एवार्ड अनाउंस हुआ उसको वे नही मानते तो पहली बातो को ओपन करने का सवाल ही नही

होता। शाह कमीशन के फैसले को उन्होने नही माना और जब चण्डीगढ और खरड़ इन को मिल गया तो उन्होने दीवाली मनाने की बात की। लेकिन आज वे कहते है कि न तो वे शाह कमीशन के फेसलक को मानने की बात कीह। लेकिन आज वे कहते है कि न तो वे शाह कमीशन के फैसले को मानने के लिए तैयार है और न ही प्रधान मंत्री के एवार्ड को मानने के लिए तैयार है। मै समझता हू कि ऐसा वह इस लिए कर रहे है कि शायद उनकों यह ख्याल है कि हरियाणा के लोग कमजोर है। लेकिन मै यहा पर बताना चाहता हूं कि हरियाणा के लोग इतने कमजोर नही है जितना उन्होने समझ रखा है। हम 81 लैजिसलेटर्ज यहा पर बैठे हुए है और हरियाणा के लोगो की सारी आशाए हमारे साथ बंधी हुई है। अगर आज हम इस बात मे गलफत कर जाते है, किसी के दबाव मे आकर डर जाते है, अगर आज हम अपने फर्ज की पूरी अदायगी नही करते तो आने वाली औलाद हमे इस बात के लिए बख्शेगी नही। शाह कमीशन भी हम ने इग्नौर कर दिया और प्रधान मंत्री के एवार्ड को भी अगर हम न मनवाए तो हरियाणा की जनता हमे बख्शने की नही। इसलिए हमे एक रास्ता बना कर चलना चाहिए। मेरी राह है, चाहे सदन के और मैम्बर इस बात को किसी तरह माने कि आज हमारे चीफ मिनिस्टर बहुत मजबूत है, थम्पिंग मैजोरिटी उनके साथ है, और जहां तक अपोजीशन का ताल्लूक है हम इस मसले मे सारे उनके साथ है। इसलिए उनका बड़ी मजबूती के साथ स्टैंड लेना चाहिए और पंजाब के दबाव मे नही आना चाहिए। ज्ञानी जैल सिंह जी, जो इस वक्त पंजाब के

चीफ मिनिस्टर है वे सन् 1962 से लेकर 1966 तक मेरे साथ एम. एल.ए. रहे, वे बड़े सुलझे हुए शक्स है, लेकिन खड़क सिह और संत फतेह सिह की भाषा उनके दिमाग मे कब से आ गई, इस चीज से मुझे डर लग रहा है कि उनकी इस बात पर कही टकराव न हो जाए। वह आल इंडिया कांग्रेस पार्टी के मैम्बर भी है और पंजासब क चीफ मिनिस्टर भी है। इतने जिम्मेवार होते हुंए हमे इस बात की समझ नही आती कि वह प्रधान मंत्री के एवार्ड को किस तरह कहते है कि वह तो जबानी है और फिर कहते है कि यदि फाजिल्का हरियाणा को दे दिया गया तो कंटिग्युटि टूट जाएगी और हरियाणा भी बार्डर स्अेटप बन जाएगा। वे ऐसा समझते है कि जैसे हरियाणा के लोगो की रगों मे खुन नही है और खुन की बजाए पानी भरा हुआ है। इस किस्म की ज्ञानी जैल सिंह के दिमाग में भाषा कहां से आई इस बात से हमें खतरा पैदा हो रहा है। हम तो हरियाणा और पंजाब वाले दोनो भाई है और हरियाणा के किसी शहर मे हो या पंजाब के किसी शहर मे चले जाए कोई यह पता नही लगा सकता कि हम किसी दूसरी स्टेट के है। इसलिए मै कहूंगा कि वे ऐसी भावना पैदा न करें जिससे कि कोई आपस मे टकराव होने का खतरा पैदा हो। मै इस सदन मे बताना चाहता हूं कि हरियाणा के लोग अपने खून के आखिरी कतरे से खेल सकते है लकिन प्रधान मंत्री ने अपने एवार्ड के जरिए हमे फाजिल्का और अबोहर दिया है उसे हम लिए बिना नही छोड़ेगे। अगर प्रधान मंत्री साहिबा ने चण्डीगढ पंजाब को दे दिया है तो हम उनके इस फैसले का आदर करते है। लेकिन हमारे

हवाले नही होता तब तक हम चण्डीगढ से जाने का नाम तक नही ले सकते, हम यहां पर बैठे रहेगें। इसके अलावा 1856 के गदर से लेकर आज तक हमारे हरियाणा के वीरों ने जो कुर्बानियां की उनको सारा देश भलि भाति जानता है। सन् 1962 की चीन की लड़ाई मे, उसके बाद 1965 को 1971 की पाकिस्तान के साथ हुइ लडाईयों मे जितने परमवीर चक्र हमारे हरियाणा के बहादूर जवानों ने कमाए उतने शायद किसी और सूबे ने नही जीते। इसलिए यह कैसे कहा जा सकता है कि हरियाणा बार्डर स्टेट नही बन सकता। आज जो अब पाकिस्तान है वह साढे चार करोड़ की आबादी का देश रहा गया है। मै कहता हू अगर कभी मौका पड़े तो हरियाणा के सूबे का वह जिम्मेवारी दी जाए। हमारे बहादूर जवान पाकिस्तनान को मुह तोड़ जवाब दे सकते हैं। आप जानते है कि हमाररा हरियाणा एक विशेष किस्म का सूबा है जिस का आदमी, जिस की स्त्री और जहां के पशु भी इतने मेहनती है। जिसका कोई मुकाबला नही। हमारे लोगो की खासियत यह है कि हम सबमिसिब रहते है, पहले हम किसी को छेड़ते नही लेकिन जब छेड़ते है तो फिर छोड़ते नही है। हमारे खून मे यह तासीर है। इसलिए मै कहूंगा कि पंजबा के भाई हमारी सबमिसिवनैस को देखकर हमे चैलेज न करे। हम जानते है कि उनकी लौबी पार्लियामैंट मे तगडी तो सकती है और वह इस मसले का बड़ा बनाकर सैंटर को यह कह सकते है कि अगर आप ने हमारी बात न मानी तो पंजाब के लोग नाराज हो जाऐगें और उन्हे सम्भालना मुश्किल हो जाएगा। लेकिन प्रधान मंत्री का इस बात का भी पता

है कि हिन्दूस्तान की किसी भी लड़ाई मे हरियाणा का बहादूर कभी पीछे नही रहा इसलिए वे उनका बहका नही सकते। मै यह कहूंगा कि जैसे पंजाब वालो की लौबी है हमारी भी लौबी वहा दिल्ली मे होनी चाहिए। मेझे यकीन है, वैसे तो पहले ही प्रधान मंत्री जी के नाटिस मे है वह उनकी ट्रायल आफ सट्रैंग्थ का मौका आया तो चाहे इस्तीफे देने की बात हो या और किसी तरह की कुर्बानी देनी पड़े हम सब इस बात के लिए तैयार है और फाजिल्का और अबोहर को हम ले कर रहेंगे।

मुख्य मंत्री (चौधरी बंसी लाल): अगर संत जी का दे दो इस्तीफे तो वे ले देगे।

श्री अमर सिंहः अगर मुख्य मंत्री साहब समझते है कि मेरे इस्तीफे देने से फाजिल्का और अबोहर मिल सकता है तो देने के लिए तैयार हूं। यह कोई हंसी और मजाक की बात नही है, अब ता चीफ मिनिस्टर साहब के ऊपर ज्यादा जिम्मेदारी हैं।

पंडित चिरंजी लाल शर्मा: आप के साथ इस्तीफे हम भी देगे।

श्री अमर सिंहः मै इतना ही कहूंगा कि यह जो हमारे साथ ज्यादती हुई है इसका हरियाणा की जनता बरदाश्त नही करेगी। (विघ्न)

श्री अध्यक्षः सदन कल 9ण्30 बजेक तक के लिये स्थगित किया जाता है।

1.00 P.M.

(इस समय सदन की बैठक शुक्रवार, दिनांक 6 अक्तूबर, 1972, को प्रातः नौ बजे तक के लिए स्थगित हुई)